द्‌वितीय अध्याय

" विवेच्य कहानियों का सामान्य परिचय "

-: द्वितीय अध्याय :-

" विवेच्य कहानियों का सामान्य परिचय "

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का विषय " वर्ष 2005 की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित कहानियों का अनुशीलन " है | प्रस्तुत अध्याय में कहानियों का सामान्य परिचय दिया जा रहा है | इसको पढ़कर अनुमान लगाया जा सकता है कि, वर्ष 2005 की ' हंस ' पत्रिकाओं में प्रकाशित कहानियों के कथानक क्या है | ' हंस ' पत्रिका के संपादक ' राजेंद्र यादव ' जी इसके उद्देश्य के बारे में लिखते हैं, " हंस का एक उद्देश्य यह भी है कि सोच के दकियानूसीपने और रुढ़िप्रियता से रचनाकार मुक्त हो ... और संसार या जीवन का कोई भी जैनुअन (ईमानदार) अनुभव उसके लिए बहिष्कृत या अछूत न माना जाये |" .[1] प्रस्तुत वाक्य की सत्यता ' वर्ष - 2005 ' की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित कहानियों को पढ़ते समय नज़र आती है |

प्रस्तुत अध्याय में कुल अड़तीस कहानियाँ हैं |इन कहानियों में अठ्ठाईस लेखक और दस लेखिकाएँ हैं | ये हिंदी सुप्रसिद्ध कहानीकार हैं | विवेच्य कहानियों का सामान्य परिचय प्रकाशन क्रम के अनुसार दिया गया हैं | यह निम्नलिखित हैं |

2.1 शिनाख्त :-

जनवरी, 2005 की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित ' शिनाख्त ' कहानी ' नरेंद्र नागदेव ' द्वारा लिखित है |

प्रस्तुत कहानी का नायक एक नवयुवक है | जिसका नाम कहानी में नहीं दिया है | उसका बचपन सुख और आराम से बीत चुका है | परिवार और मुहल्ले के सदस्यों ने उसे हमेशा बहुत प्यार दिया है | उसके शहर में संप्रदाय के कारण अचानक दंगा छिड़ गया | उस समय नवयुवक ने भी बिना कुछ सोचे, समझे उससे बहुत प्यार करनेवाले अंकल को उनका संप्रदाय अलग होने के कारण रस्सी से पीटा | दंगा ख़त्म हुआ | पुलिस द्वारा दंगाईयों की शिनाख्त की गई | अतः स्वयं का नाम पुलिस के पास पाकर युवक ड़र गया | उसने माने हुए अंकल को शहर के सुप्रसिद्ध होटल में मुलाकात करने

के लिए बुलाया | क्योंकि वही अंकल उसंकी दंगाई कहकर शिनाख्त करनेवाले हैं | अंकल युवक से मिलने होटल में आये |

आज युवक ने अंकल को अपने स्वार्थ के लिए ही होटल में बुलाया है | पुलिस ने शिनाख्त करने के लिए अंकल को थाने बुलाया है | नवयुवक चाहता है, अंकल उसकी शिनाख्त न करें | ऐसा कहते समय वह निर्लज्जता से उनसे बातें करता है | अंकल उसे कहते हैं, " मैं... तुम्हारी शिनाख्त जरुर करुँगा |" [2] इस बात को सुनकर युवक परेशान होता है |

' शिनाख्त ' कहानी बिगड़ती युवा पीढ़ी की मानसिकता का प्रतिनिधित्त्व करती है |आतंक के कारण आम जनता पर बुरा असर पड़ता है |जीवित एवं वित्त हानि होती है | प्रस्तुत कहानी में ' आतंकवाद की समस्या ' दिखाई देती है |

2.2 <u>**प्रेतकामना**</u> :-

जनवरी,2005 की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित ' प्रेतकामना ' कहानी ' मनीषा कुलश्रेष्ठ ' द्वारा लिखित है | आप वेब पत्रिका Hindinest. Com की संपादिका है|

डॉ. महेश्वरपंत मानवशास्त्र के महान ज्ञाता, लेखक एवं स्कॉलर है | उनके पत्नी की मृत्यु होने से वे अकेले हो गए हैं | उनका बेटा उसकी पत्नी और उसके बेटे के साथ अलग रहता है | वह कभी-कभी पापा से मिलने आता है | इसी दौरान अमरीका स्थित महेश्वरपंत जी की शोध-छात्रा ' अणिमा ' उनसे मुलाकात करने उनके घर आती है | अणिमा कॉलेज जीवन से सर से एकतर्फा प्रेम करती है | वह हमेशा कहती, सर मैं आपकी शिष्या एकलव्य बनकर रहूँगी | उसने शिक्षा करिअर को चुना था | वह अविवाहितता है | सर का अकेलापन, जीवन में छायी उदासी और अणिमा का एकतर्फा प्रेम इन कारणों से वे दोनों शारीरिक स्तर पर पास आ गये | इसी पल सर का बेटा सलिल उनसे मिलने आता है | पापा को अणिमा के साथ देखकर वह गुस्से से अपने घर चला जाता है | सर हड़बड़ा जाते है कि, इतने वर्षों का आदर्श आज कैसे ढ़हा ? वे अणिमा को भी घर जाने को कहते हैं |

सलिल और अणिमा के चले जाने पर महेश्वरपंत सोचने लगते हैं कि, मैं अकेला, घूटनभरा जीवन जी रहा था, तब बेटे और समाज ने मेरा खयाल नहीं रखा | तो अब बेटे और समाज से क्यों

डरूँ ? तभी अणिमा फोन करके सर से कहती है, आपने कोई गलती नहीं की है | अपने स्वाभिमान को बनाए रखिए और बच्चों से कोई सफाई देने की जरूरत नहीं है | सलिल से कहना, तुम्हारे आने का मुझे पता नहीं चला | इन बातों से सर में पुनः आत्मविश्वास निर्माण हुआ |

सुबह सलिल का फोन आने पर उसके पापा ने कहा, वे अपने नये प्रोजेक्ट के लिए मटेरियल जमा कर रहे हैं | अगले महीने उन्हें अमरीका जाना पड़ेगा |

' प्रेतकामना ' कहानी की अणिमा ' आधुनिक नारी ' का प्रतिनिधित्त्व करती है | जो प्रेरणादायी, आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर नारी है | अवैध यौन संबंध रखने से सर के मन और परिवार में उठे बवंड़र का सामना करने के लिए अणिमा सर का हौसला बढ़ाते हुए उनमें आत्मविश्वास जगाती है | जिससे सर की प्रतिभा मुखरती है | प्रस्तुत कहानी में अंतर्द्वद्व की समस्या को दर्शाया है |

2.3 **पब्लिक** :-

फरवरी, 2005 की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित ' पब्लिक ' कहानी वरिष्ठ कथाकार ' रामधारी सिंह दिवाकर ' द्वारा लिखित है | प्रस्तुत कहानी राजनेताओं और जनता का हू-ब-हू चित्रण करने में सफल हुई है |

' पब्लिक ' कहानी के अस्सी आयु के राजपूत घूरनसिंह की 500 एकड़ जमीन थी | उनके दोनों बेटों ने ' विनोबा ' जी द्वारा चलाये गए ' भूदान आंदोलन ' में 15 एकड़ जमीन दान दी | वह बालूवाली जमीन सरकार ने दलितों और मजदूरों में बाँट दी | उस जमीन में सिंचाई द्वारा नदी का पानी पहुँचने से अच्छी फसल तैयार होने लगी | अब घूरनसिंह को जमीन दान देने की बात पर पछतावा होता है | अतः पिछले छह वर्षों से कटाई के समय जोतदारों और घूरनसिंह के आदमियों में मार पीठ होती थी |

राजपूतों को खेत में काम करने के लिए मजदूरों का मिलना बंद हो गया | वे शहर नौकरी करने या राजनीति में आने लगे | यादव टोले का मर्डर, डकैती, तस्करी करनेवाला ' डायमंड ' मजदूरों का नेता बनकर ' विधानसभा ' में चुनाव जीतकर आया | घूरनसिंह का नाती ' बैताल सिंह ' भी विधानसभा में चुनाव जीतकर आया |

' बैताल सिंह ' जब से राजनीति में आया था तब से आतंक बढ़ने लगा | वह गाँव आते समय हथियारों से लैस अपने रक्षक लाता और गाँव के मजदूरों पर अन्याय करता | इस बात से मजदूरों का नेता ' डायमंड़ ' और ' बैताल ' में दुश्मनी बढ़ने लगी | इसी वर्ष भुदनियां जमीन मार-काट में बौधू का बड़ा भाई और बनारसी का बाप मारे गए | इस कांड में बैताल द्‌वारा भेजा गया गुंडा ' राजो सिंह ' भी शामिल था, जो पुलिस की ड़र से लापता हुआ | मंत्रीजी द्‌वारा मृत व्यक्ति के घरवालों को एक-एक लाख रूपये देने की घोषणा की गई | इस बात का पता चलने पर बौधू, बनारसी, टेकन गुरूजी को साथ लेकर डायमंड के बंगले की ओर चल पड़े | वे तीनों आपस में बातें करने लगे | बौधू ने डायमंड द्‌वारा पुराने विधायक का बंगला हथिया लेने और बैताल की लुधियाने में फैक्टरी होने की बात कही | बनारसी ने डायमंड का शहर में होटल है, तथा दोनों नेताओं ने आपस में रेल का ठेका साथ लेने की बात बतायी | गुरूजी ने डायमंड की तीन पत्नियाँ होने की बात बतायी | बातें करते हुए डायमंड के बंगले पर दूर से उन्होंने देखा कि, गाड़ियों के पास हथियारों से लैस आदमी है और वही पास डायमंड, बैताल, राजो सिंह एक साथ हैं | इस बात को देखकर तीनों को अचरज हुआ | उनकी आहट लगने पर उनकी पूछताछ की गई तब पेड़ के नीचे से आवाज आयी, " हम हैं हजूर ... हम ... पब्लिक. " [3]

' पब्लिक ' कहानी में भ्रष्ट जमींदार और भ्रष्ट राजनीति का सुंदर चित्रण किया है | प्रस्तुत कहानी में बताया गया है कि, आम जनता राजनेताओं की पूरी जानकारी रखती है | प्रस्तुत कहानी में मुखौटेबाज राजनेता की समस्या चित्रित है |

2.4 <u>एक लड़की की मौत</u> :-

फरवरी,2005 की 'हंस ' पत्रिका में प्रकाशित ' एक लड़की की मौत ' कहानी ' लवलीन ' द्‌वारा लिखित है | यह कहानी अचेतनग्रस्त नारी पर आधारित है |

प्रस्तुत कहानी की नायिका बचपन से सपने देखती है | माँ का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करने के लिए वह रोती, तो माँ थपकियाँ देकर उसे सुलाती |

नायिका बड़ी होने पर स्कूल जाने लगी | स्कूल के कमरे में देर तक बैठना उसे अच्छा नहीं लगता था | उसे स्कूल जाना अच्छा नहीं लगता | वह अपने सपनों के प्रति सचेत, महत्त्वाकांक्षी बन

गई | माँ की ध्यान में यह परिवर्तन जब नज़र आया, तो दिवास्वप्नों से बेटी को मुक्त करने के लिए वह उसे समझाने लगी | काम की ओर उसका ध्यान न होने से सब उसे ड़ाँटते रहते | वह एकांत स्थान देखकर दिवास्वप्नों में अपनी इच्छा-आकांक्षाएँ फलित होते देखती | उम्र के साथ वह सपनों में ही अधिकतर खोने लगी, जिससे वह अनिद्रा की शिकार हुई | वह यथार्थ और फैन्टसी में जीनेवाली लड़की बन गई |

लड़की को किशोरावस्था में प्यार हुआ | उसके चाचा ने उसे मारने की ताकीद दी, जिससे घरवाले उसके प्रेम का विरोध करते हैं, इस बात का उसे एहसास हुआ |

एक समय नायिका ने सपने में अपनी मौत देखी | उसकी अंत्येष्टि में उसका प्रेमी भी है, यह देखकर वह घबरा गई | उसे विश्वास हुआ कि, उसके घरवाले प्रेमी को परेशान करेंगे | उस समय पहली बार उसे जीने की कामना हुई | उसने सपने को नकारते हुए जीवन जीने के लिए संघर्ष किया | इस तरह नायिका चेतना में लौटी |

प्रस्तुत कहानी अचेतन ग्रस्त नारी मनोविज्ञान की है, जिसका लेखिका ने सुंदर चित्रण प्रस्तुत किया है |

2.5 **अंधेरे में आकार लेता नाटक** :-

फरवरी, 2005 की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित ' अंधेरे में आकार लेता नाटक ' कहानी ' दूर्वा सहाय ' द्‌वारा लिखित है | प्रस्तुत कहानी ' सामाजिक समस्या ' पर आधारित है |

प्रस्तुत कहानी रेल यात्रा के दौरान आये अनुभव पर आधारित है | रात के समय दिल्ली जानेवाली रेल में पंकज की पत्नी अपनी बेटी के साथ यात्रा कर रही है | बेटी उपर के बर्थ में लेटकर पढ़ने लगी | उसके नीचले बर्थ पर पंकज की पत्नी पत्रिका पढ़ने लगी | उनकी सामने की बर्थ पर एक देहाती लड़की के साथ उससे उम्र में बड़ा आदमी बैठा है | सामने की बर्थ पर अश्लील दृश्य घटनेवाला है, यह अनुमान लगाकर पंकज की पत्नी ने पढ़ना बंद किया | बेटी सो रही है, यह देखा और स्वयं सोने की कोशिश करने लगी | उसे लगा, रेल में धूम्रपान की तरह अश्लील हरकतों पर भी रोक लगानी चाहिए | उसी समय पंकज को जाननेवाला एक टी.सी.वहाँ आया | उसने सब ठीक होने की पुष्टि की |

16369

उसके आने से एक अश्लील दृश्य घटने से रूका | टी.सी. का बहुत देर तक पास खड़ा रहना पंकज की पत्नी को अखरने लगा | कुछ रूपए देने पर वह वहाँ से चला गया |

टी.सी.के जाने पर सामने की बर्थ पर हुई बातों से पंकज की पत्नी ने जाना कि, वे दोनों पति-पत्नी नहीं हैं | उनमें मामा-भतीजी का रिश्ता है और वे दिल्ली स्टेशन पर उतरनेवाले हैं | पंकज की पत्नी ने सोचा, लड़की को समझा दे, इतनी अधिक उम्र के पुरूष के साथ संबंध रखना अच्छी बात नहीं है, लेकिन लड़की की हरकतों से वह भोली नहीं जान कर वह सो गई | सुबह स्टेशन पर उतरने के उपरांत उसने देखा, एक स्थान पर उन दोनों के रास्ते अलग-अलग हो गए |

प्रस्तुत कहानी में रेल के रिश्वतखोर टी.सी. की समस्या को दर्शाया है | रेल में अश्लील हरकतों पर रोक लगानी चाहिए, यह बताया गया है |

2.6 **भेड़ियाधसान** :-

मार्च, 2005 की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित ' भेड़ियाधसान ' कहानी ' राजेन्द्र सिन्हा ' द्वारा लिखित है | प्रस्तुत कहानी तीर्थ स्थलों पर चलनेवाले गंदगी एवं अनाचार का चित्रण करती है |

प्रस्तुत कहानी में सावन महीने के दूसरे सोमवार को श्रद्धालु मनोकामना पूरी होने के लिए बैद्यनाथधाम पहुँचने से पहले सुल्तानगंज आये हैं | अनगिनत यात्रियों के कारण सभी ओर भीड़ हैं | यात्री मार्गदर्शक सरदारों के दल में दी गई सूचनाओं के अनुसार यात्रा का प्रारंभ करते हैं | सरदारों के एक दल में जीव विज्ञान के प्राध्यापक अपनी पत्नी सुभद्रा के साथ पुत्रकामना हेतु यात्रा करने आये हैं | सरदार के अनुसार दल के सभी यात्री ' गंगा-पूजन ' करते हैं |

सुभद्रा मैली गंगा का पानी देखकर स्नान नहीं करती | समीर के समझाने पर वह सोचती है, डॉक्टरों की जाँच से समीर में कुछ दोष होने से बच्चा नहीं होगा यह जानने पर भी वह अंधविश्वास में क्यों फँसा है ? फिर भी समीर से बहुत प्रेम करने से वह उसकी बात मानती है | यात्री पैदल बैद्यानाथधाम निकल पड़े | समीर सुभद्रा के साथ जहाँ नाश्ता करता है वहाँ बच्चे समीर से भीख माँगते हैं, जिससे समीर मना करता है | सुभद्रा सोचती है, भगवान से बेटे की भीख माँगने आया भिखारी इतरा रहा है | वहीं कैसेट के बजने से शोर बढ़ गया है | समीर इससे परेशान होकर गाँव के

एक मंदिर में आता है | वहाँ विवेकानंद जैसे महापुरुषों की तस्वीरों को देखकर समीर की पत्नी उसे समझाती है, महापुरुषों की तरह कर्म करते हुए फल की चिंता न करने से वह खुश रह सकेगा | मंदिर के पुजारी द्वारा उसे पता चलता है कि, पुत्रकामना करनेवाले श्रद्धालुओं को प्रसाद रुप में इक्कीस भैसों के बच्चों की बलि दिया ' मांस ' दिया जाता है | ये बात सुनकर समीर की आँखें खुली | वह पत्नी के साथ घर वापिस आया |

प्रस्तुत कहानी में धर्म के नाम पर पशुहत्या, अंधविश्वास इन समस्याओं को उद्घाटित किया है | समीर में परिवर्तन दिखाकर लेखक ने मानव समाज में व्याप्त अंधविश्वास दूर करने का प्रयास किया है | विज्ञान पर आधारित दृष्टिकोण स्पष्ट किया है |

2.7 **मधुबन में राधिका** :-

मार्च, 2005 की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित ' मधुबन में राधिका ' कहानी ' ग़ज़ल जैगम ' द्वारा लिखित है | प्रस्तुत कहानी असंगत आचरण करनेवाली महिला पर आधारित है |

प्रस्तुत कहानी की नायिका ' नजमा बाजी ' कहानियाँ लिखती हैं | उसकी सोच है, पुरुष बेवफा होते हैं | पुरुषों से नफरत करने के बावजूद अधिकतर पुरुष ही उनके दोस्त हैं | कथावाचक महिला का नजमा से परिचय उनके सह-कर्मचारी ' साजिद ' के घर हुआ | नजमा की ' कथनी और करनी ' में अंतर दिखाई देता है | उसकी उम्र बयालीस वर्ष की है | वह ' साजिद ' द्वारा दी गई पार्टी में weight conscious कहते हुए देसी घी का हलवा खाती है | साजिद और नजमा की दोस्ती के कारण साजिद की पत्नी ' साइमा ' विवाद करके मायके चली जाती है |

नजमा के साथ हर समय नए पुरुष देखने को मिलते | नजमा ने अब कथावाचक महिला और उसके पति के साथ दोस्ती बढ़ाई |इन दोनों को अपने तलाकनामे पर दस्तखत करने के लिए गवाह बनने को राजी किया |

कथावाचक को साजिद ने बताया कि, हँसमुख नजमा ने डिप्रेशन में जाकर आत्महत्या करने की कोशिश की | उससे बचने पर नजमा को जब होश आया तो उसने देखा, उसके पास दोनों पति,

उसके दो बच्चे, कुछ नामी शायर, लेखक कार्ड, बुके, ग्रिटींग्ज साथ लिये खड़े थे | नजमा प्रसन्न मुद्रा से सबकी भेंट ले रही थी |

' मधुबन में राधिका ' कहानी में असंगत आचरण करनेवाली महिलाओं की समस्या का चित्रण किया है | प्रस्तुत कहानी का शीर्षक ' प्रतीकात्मक ' है | ' मधुबन ' प्यार का और ' राधिका ' प्रेमिका का प्रतीक है | नजमा रुपी राधिका सब मर्दों के घेरे में अर्थात् मधुबन में रहती है |

2.8 **<u>दृष्टि</u>** :-

मार्च, 2005 की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित ' दृष्टि ' कहानी ' जितेन्द्र भगत ' द्वारा लिखित है | प्रस्तुत कहानी दृष्टिहीन लोगों की समस्याएँ, समाज का उनके प्रति व्यवहार, उनकी मानसिकता को उजागर करती हैं |

प्रस्तुत कहानी में ' अभय ' और ' अम्लान ' दोनों दृष्टिहीन दोस्त हैं | अम्लान को किसी की मदद् लेना, स्टिक का प्रयोग करना पसंद नहीं | अम्लान अभय से मिलने उसके घर आता है | उसे बी. एड़. के पेपर लिखवाने के लिए राइटर की जरुरत है | जिसे ढूँढ़ने में अभय उसकी मदद् करेगा |

अभय को रंगों में फर्क करना, दिन रात पहचानना, इतिहास और फिल्मों की जानकारी रखना पसंद है | दृष्टिहीन लोगों को नौकरी में आरक्षण मिलने हेतु साथियों द्वारा धरने देकर अभय वी.सी. (vice chancellor) ऑफिस के सामने बैठा रहा | वहाँ इस आंदोलन पर रोक लगाने के लिए कुछ दृष्टिहीनों को पुलिस ने गिरफ्तार किया | इसी सिलसिले में अभय की वकीलों से मुलाकातें बढ़ रही हैं |

अभय और अम्लान बस से ' डूवा ' जा रहे हैं, तब कंडक्टर उन्हें ' ब्लाइंड ' कहकर नाटक करते हो, ऐसा कहता है | यह बात ' अम्लान ' को अच्छी नहीं लगती | अम्लान डूवा (' Delhi University Womens Association ') रिकॉर्डिंग के लिए कैसेट देनेवाला है | अभय बी.आर.ए. (Blind Relief Association) जाकर राइटर बनने के लिए किसी से बात करेगा | अभय अम्लान को काम खत्म होने पर वी.सी. ऑफिस आने के लिए कहता है |

' डूवा ' पहुँचकर ' अम्लान ' को अभय की बातें याद आती है कि, स्टिक का प्रयोग करो | उसके उपरांत उसे प्रेमिका 'मंजरी ' की आवाज सुनायी देती है | अम्लान ने अपने प्रेम का इजहार उसके सामने कभी किया नहीं था |दृष्टिहीन होने से ' मंजरी ' उसे देख नहीं पायी, इस बात का संतोष होने से वह वी.सी. ऑफिस अभय की ओर चला गया |

प्रस्तुत कहानी यह संदेश देती है, समाज को दृष्टिहीन लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करना चाहिए | दृष्टिहीन लोगों को अपनी कमजोरी को स्वीकार करके उसमें कमी ढूँढ़ने के बजाय अपना जीवन सरलता से जीना चाहिए |

2.9 **<u>खैरियत है</u>** :-

मार्च, 2005 की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित ' खैरियत है ' कहानी विजय द्वारा लिखित है | प्रस्तुत कहानी में मजहबी दंगों के कारण होनेवाले प्रभाव का चित्रण किया है |

' नाना-नाती घटिया ' पर बाजार है, वहाँ ' मंसूर मियां ' की दो दुकानें हैं | उनके बेटे की दुर्घटना में मृत्यु होने से उन्होंने एक दुकान हिंदू ' सतीश अरोरा ' को पाँच लाख रुपए में बेच दी | वे रुपए बहू सुरैय्या के नाम करा दिए | ये बात ' रफीक ' मेडिकल स्टोरवाले को पसंद नहीं आई | अतः उसने गुंड़े भेजकर ' सतीश अरोरा ' की पिटाई की | वे गुंड़े सुरैय्या को उठा ले गये |इस बात से बात बढ़कर दंगे की शुरुआत हुई और मजहबी दंगे में परिवर्तित हुई |

शहर में अचानक निर्माण हुए दंगों को देखकर पुलिस ने कारवाई की | ज्वाइंट कमिश्नर ऑफ पुलिस, जावेद अली ने अपनी निगरानी में शहर में अमन लाने की कोशिश की | इसमें उन्हें पूरे पाँच दिन और पाँच रातों के बाद सफलता मिली | उन पर स्थानीय नेताओं और वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों का दबाव भी था | शहर में अमन लाने के पश्चात् वे थक कर अपने घर चले आये | घर आकर थकने के कारण उन्हें नींद आई | सपनें में जावेद को दंगे से प्रभावित लोगों का चीखना, चिल्लाना, मकानों का जलना यही बातें दिखाई देने लगी | अतः वे नींद से जाग उठे तो उनकी पत्नी ' जरीना 'ने उन्हें बताया, कमिश्नर साहब ने उन्हें बधाई दी है | जावेद के बेटे का फोन आया था, तो जरीना ने उसे सब

खैरियत होने का समाचार बताया | ये शब्द जावेद के कानों में गूँजने लगे क्योंकि वे जानते हैं इस दंगे से प्रभावित लोग, इज्जत लूटी औरतें जीवन में कभी ' खैरियत है ' ऐसा नहीं कह पायेंगी |

प्रस्तुत कहानी आतंकवाद से पीड़ित जनता तथा जिम्मेवार पुलिस अधिकारी को आधार मानकर लिखी गई है | आतंकवाद का चित्रण प्रस्तुत कहानी में किया गया है |

2.10 **त्रिकोण** :-

मार्च, 2005 की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित ' त्रिकोण ' कहानी ' राजीव सिंह ' द्वारा लिखित है | प्रस्तुत कहानी में कश्मकश में जीनेवाले व्यक्ति का चित्रण किया है |

प्रस्तुत कहानी का नायक ' मुकुल ' अपने अभिभावकों के साथ रहता है | जब उसे पता चलता है कि, उसका बड़ा भाई उसके परिवार के साथ यहाँ इसलिए नहीं रहता कि उसके माँ बाप चारित्र्यहीन है तो वह घर छोड़कर महानगर आता है | उसे वहाँ एक संस्था में बच्चों की देखभाल करने की नौकरी मिलती है | वह संस्था की एक बच्ची ' चमेली 'को प्यार से उठाकर उसके माथे को चूमता है | अबोध चमेली उसे पूछती है, आप हमारे पापा हो ? तो मुकुल ' हां ' कहकर उसे उस दिन से ' जैसमिन ' नाम से बुलाने लगता है |

संस्था में नौकरी करते हुए ' मुकुल ' को एक दशक बीत गया | जैसमिन बड़ी होने लगी | वह अपने पिता की तरह मुकुल का खयाल रखती है | मुकुल को उसकी प्रेमिका ने प्रेम का दिखावा करके फँसाया है | अतः उसका ' प्रेम ' इस शब्द से विश्वास उड़ गया है | सच्चे प्रेम में धोखा पाने के बाद मुकुल ने भी अनेक लड़कियों से प्यार का दिखावा करके उनको फँसाया है | फिर भी मुकुल के अंदर का पुरुष अबोध जैसमिन के बारे में सोचता है, उसे कोई पुरुष प्रेम में धोखा न दे | ' मुकुल ' एक बाप की तरह ' जैसमिन ' के बारे में सोचता है | वह अपनी जिंदगी में आई माँ, प्रेमिका ऋचा, और जैसमिन इन तीनों का चारित्र्य देखकर सोचता है | दुनिया ' त्रिकोण ' की तरह होती है, जिसमें माँ, ऋचा और जैसमिन जैसी औरतें होती है |

' त्रिकोण ' कहानी कश्मकश में जीनेवाले व्यक्तिओं की समस्या को दर्शाती है | मुकुल दिल से अच्छा व्यक्ति है, पर परिस्थिति एवं घटनाओं ने उसे मजबूर किया है | वह मानी हुई बेटी जैसमिन

के बारे में बाप की तरह योग्य, सार्थक बातें सोचता है | प्रस्तुत कहानी में बताया है कि, दुनिया में माँ और ऋचा जैसी चारित्र्यहीन, विश्वासघाती महिलाओं के साथ जैसमिन जैसी सीधे विचारोंवाली लड़कियाँ भी होती हैं |

2.11 **तैंतीस परसेंट** :-

अप्रैल,2005 की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित ' तैंतीस परसेंट ' कहानी ' नीलिमा सिन्हा ' द्वारा लिखित है | जो महिलाओं को प्राप्त ' तैंतीस परसेंट ' आरक्षण पर आधारित है |

प्रदेश कार्यालय में जिला-अध्यक्षों की मीटिंग बुलाई गई है | जिसमें ' तैंतीस परसेंट ' आरक्षण के तहत् चुनाव जीती महिलाएँ शामिल हैं | इसमें सांगठनिक पदाधिकारी ' प्रदीप ' की पत्नी 'रुचि' है | उसका परिचय दलित महिला ' भगवानो देवी ' से होता है | उसे ' जिला-अध्यक्ष ' बनने में ' महेंद्र बाबू ' ने सहायता की है | सभागार में बैठे नेता अपना मत देकर प्रस्ताव मंजूर कर रहे हैं | ' तैंतीस परसेंट ' आरक्षण के अंतर्गत जीतकर आई महिलाएँ सभागार में एक जगह गोलाकार बैठी हैं | वे पहली बार एक-दूसरे से मिल रही हैं, बात-चीत कर रही हैं |

गोलाकार बैठी महिलाओं में ' नीरा चौधरी ' है | जिसका विवाह उससे उम्र में बड़े, अमीर व्यक्ति ,पहली पत्नी से छः संतान प्राप्त ' रामसिंहासन ' से हुआ है | विवाह के उपरांत उसकी नसबंदी की गई | अतः मातृत्त्व का हक़ छीन जाने से दुःखी, परेशान नीरा आज जिला-अध्यक्ष बनने से खुश दिखाई देती है | शाहीन, निशा दोनों हँसी-मिजाजवाली सहेलियाँ हैं | वे मजाक करती सबका मनोरंजन कर रही हैं | ' सरस्वती ' गाना गाती है , तो ' सुमित्रा' स्वाभावानुसार उसमें दखलअंदाजी करती है | अतः सरस्वती नाराज होती है | वे दोनों पार्टी की कार्यकर्ता रही हैं, जिन्हें आज पहली बार पद-प्रतिष्ठा प्राप्त हुई हैं | राज्य सरकार की मंत्री ' दीपशिखा ' उनके पास आई और उन सबसे बताया कि, खाने के पैकेट्स बाँटे जा रहे हैं, वे ले जाओ | राजनीति में गाफिल रहना अच्छी बात नहीं | वह जुझारु, दबंग, मुंहफटी महिला है |

प्रस्तुत कहानी आत्मनिर्भर, आधुनिक स्त्री का प्रतिनिधित्त्व करती है | ' तैंतीस परसेंट ' आरक्षण के तहत् महिलाओं को सुचारु रुप से राजनीति में आने का अवसर प्राप्त हुआ | जिससे

राजनीति के अनेक पहलुओं को जानकर अच्छी तरह से वे अपना कार्य निभा रही हैं | प्रस्तुत कहानी में ' वर्णनात्मक शैली ' के दर्शन होते हैं |

2.12 **<u>शोकगीत</u>** :-

अप्रैल,2005 की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित ' शोकगीत ' कहानी ' कुणाल सिंह ' द्वारा लिखित है |

प्रस्तुत कहानी के नायक कुणाल और उसका दोस्त मेहंदीरत्ता दोनों को कोई उचित कारण बताए बिना तीन महीने का वेतन देकर नौकरी से निकाल दिया है | इस बात को ग्यारह दिन बीत चुके हैं | फिर भी उन दोनों ने यह बात परिवारवालों को बताई नहीं हैं | वे दोनों प्रति दिन सुबह घर से टिफिन लेकर निकलते हैं, घूमते हैं, दोपहर टिफिन खाते हैं और बीयर पीकर रात को देर से घर पहुँचते हैं | अब वे बेकार हैं, दूसरी नौकरी ढूँढ़ रहे हैं | एक दिन कुणाल एलिन रोड़ से गुजरते हुए सामने से प्रेमिका इंद्रलिपि को आते देखता है |कुणाल को नौकरी से निकाल दिया है, यह बात उसे पता नहीं | इसलिए वह इंद्रलिपि से मुँह छिपाता है | इंद्रलिपि और कुणाल का विवाह ' मार्च ' महीने में होनेवाला है |

कुणाल के पास अब फोन के लिए भी पैसे नहीं बचे | इन बातों से वह परेशान हो गया | दूसरी नौकरी भी नहीं मिल रही है | उसे लगा वह अपनी प्रेमिका से झूठ बोल रहा है आखिर वह उसे सारी बातें सच बताने का फैसला करता हैं | वह इंद्रलिपि को फोन तो लगाता है | पर उसके साथ बोलने का साहस नहीं कर पाता | अत: फोन बंद कर देता हैं | कुणाल नौकरी जाने की बात ना अपनी प्रेमिका को बता पाता है ना घरवालों को | वह दुविधा में फँस गया है | उसे कॉन्ट्रेक्ट पर दी जानेवाली नौकरी की पद्धति पर गुस्सा आता है |

प्रस्तुत कहानी में बेकारी, नौकरी का नवीनीकरण इन समस्याओं को दर्शाया है | प्रस्तुत कहानी में ' कुणाल ' आज के युवकों का प्रतिनिधित्त्व करनेवाला पात्र है, जिसके माध्यम से लेखक ने यथार्थ चित्रित किया है |

2.13 **खजांची** :-

अप्रैल, 2005 की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित ' खजांची ' कहानी ' कांति देव 'द्वारा लिखित है | प्रस्तुत कहानी ईमानदार, कर्तव्यनिष्ठ पुलिस अधिकारी की कथा है |

शहर में अचानक हत्याओं की घटनाएँ हो रही हैं | डी.एस.पी.(District superintendent of police) माथुर की निगरानी में शहर की स्थिति संतोषजनक होने का समाचार मिला | अब राशन बँटवाई का काम होने लगा, तो एक बच्चा बड़ों के बराबर राशन माँग रहा है | माथुर ने उस बच्चे से बात की | उन्हें पता चला बच्चे का नाम 'खजांची ' है, उसकी माँ बीमार है, तो दंगे के कारण पिछले सात-आठ दिनों से उसके पिता घर नहीं लौटे,अत: वह स्वयं राशन लेने आया है | माथुर ने खजांची को राशन और अपने नौकर द्वारा खाना परोसने की बात कही | खजांची स्वयं खाना बनाता है, जानकर उसे प्रतिदिन खाना देने की बात भी माथुर ने नौकर से कही |

शहर में फिर से चार हरिजनों के खून होने का समाचार माथुर को मिला | जाँच से पता चला कि, उच्च कुल की लड़की के साथ हरिजन ' मनहर ' प्रेम करता है | यह जानकर उच्च कुल के लोगों ने मनहर की हत्या की | इस बात पर हरिजनों ने गालियाँ दी तो विपक्ष ने उन हरिजनों की भी हत्या की | वहाँ से लौटने पर माथुर ने देखा, खजांची हँसिया लेकर कैंप के पास की घास काटने आया है | तो माथुर ने उसे मना किया |

शहर में कुछ दिन शांति का वातावरण रहा, तो माथुर घर आये | बीमार पत्नी को अकेले छोड़कर बच्चों का खेलने जाना उन्हें अच्छा नहीं लगा | शहर में फिर से दंगे की वारदातें होने पर वे बीमार पत्नी की जिम्मेदारी डॉक्टर पर सौंपकर डयुटी पर चले आये |

शहर में जमींदार की हरिजनों द्वारा की गई हत्या, महरी टोला पर दो लड़कियों को मार देने की वारदात और पुलिया पर सात-आठ साल के बच्चे के चेहरे को बुरी तरह मारना, इन घटनाओं को देखकर माथुर को ' खजांची ' का खयाल आया | पुलिया पर फिर से एक नया समाचार आने से वे उधर चल दिए |

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

अंतर्जातीय प्रेम के कारण निर्माण हुए दंगे में निरपराध लोगों की मौत होती है | माथुर जैसे कर्तव्यनिष्ठ पुलिस अधिकारी को कैसे समस्याओं का सामना करना पड़ता है, इस पक्ष का चित्रण प्रस्तुत कहानी में है |

2.14 <u>दावा</u> :-

मई, 2005 की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित ' दावा ' कहानी ' प्रियंवद ' द्‌वारा लिखित है | प्रस्तुत कहानी ' आत्मकथात्मक शैली ' में लिखी गई है |

' दावा ' कहानी के नायक ' मैं ' की माँ ने जीवन भर अपने बेटे का साथ दिया | उसके बुरे कामों की बात घरवालों से छिपाकर रखी | बेटे की सुरक्षा के लिए वह ताबीज़ बाँधती है | सर्दियों में स्वास्थ्य ठीक रहने के बहाने से बेटे ने घर में ही शराब पीने की अनुमति ली | लेकिन यह बात माँ के ही कारण घरवालों को कभी पता नहीं चली | बेटा प्रेम में असफल हो गया था, इसलिए शराब अधिक पीने लगा | एक दिन वह अपनी प्रेमिका को माँ से मिलाने के लिए घर ले आया | माँ की अनुमति से दोनों ने एक कमरे में जाकर बातें की | प्रेमिका का किसी अन्य व्यक्ति के साथ विवाह तय हो गया था | वे दोनों कभी-कभी मुलाकातें करते रहते, लेकिन कुछ दिनों के बाद बंद हो गई | थोड़े दिनों बाद माँ की मृत्यु हुई |

प्रस्तुत घटना के सत्रह साल बाद, बेटे को अपने कमरे में एक गिलहरी का बच्चा दिखाई दिया | बेटे ने उसे पालने का विचार किया | बेटा किताब लेकर कुशन पर बैठा | थोडी देर बाद उठा, तो उसकी ड़रावनी चीख निकली | उसकी पीठ से दबकर वह गिलहरी का बच्चा मर गया | बेटे को लगा, गिलहरी के बच्चे की मृत्यु का कारण वही है |

' दावा ' इस घटना प्रधान कहानी में ' असफल प्रेम की समस्या ' को दर्शाया गया है |

2.15 <u>घर चलते हैं डार्लिंग</u> :-

मई, 2005 की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित ' घर चलते हैं डार्लिंग ' कहानी ' नमिता सिंह ' द्‌वारा लिखित है |

प्रस्तुत कहानी आदर्श प्राध्यापिका ' नीरजा रतन ' पर आधारित है | इनका बेटा अपने परिवार के साथ अमरीका में निवास करता है | नीरजा अपने पति के साथ भारत में रहती है | ' आलोक ' इस मेधावी छात्र का 'प्रथम स्मृतिदिन 'सूचना केंद्र के हॉल में होने से वह सूचना केंद्र अपने पति के साथ जाती है | इक्कीस वर्ष उम्र के मेधावी छात्र आलोक की पिछले वर्ष दुर्घटना में मृत्यु हुई | शंभू और सरला इकलौते बेटे की मृत्यु से दु:ख के सागर में डूब गए | सरला को बेटे की अलमारी साफ करते समय जो फाईल मिली वह शंभुजी ने नीरजा जी को दी | उस फाईल में कुछ कविताओं के साथ ' किसानों की आत्महत्या ' के विषय पर ' क्षितीज के पार ' उपन्यास लिखा था | नीरजा जी ने प्रस्तुत उपन्यास में कुछ संशोधन करके संपादन का कार्य किया | उस उपन्यास को आलोक के प्रथम स्मृति दिन पर प्रकाशित करने का सुझाव दिया | जिसे शंभुजी ने मान लिया |

आज किताब प्रकाशन का समारोह है | मंच पर आलोक के किसान ताऊ, शिक्षा-संस्कृति मंत्री गिरिजा जी, कुछ अन्य लेखक उपस्थित हैं | उपस्थित मान्यगणों ने अपने विचार व्यक्त किये | शंभुजी ने युवा छात्रों के सांस्कृतिक उत्थान हेतु ट्रस्ट बनाने की घोषणा की | अब किताब की मार्गदर्शिका, पड़ोसी और प्राध्यापिका ' नीरजा ' जी को भाषण करने के लिए मंच पर आमंत्रित किया | वह अपने विचार व्यक्त करते समय अपने आँसुओं को रोक नहीं पायी | उन्हें रोता देख उपस्थित लोगों में सन्नाटा फैल गया | यह देख नीरजा के पति ' रतन ' मंच पर आ गए | उन्होंने कहा, नीरजा संवेदनशील होने के कारण अपने आँसुओं को रोक नहीं पायी | वे पत्नी को मंच के पीछे ले गए तब नीरजा ने पूछा, कुछ गलत हुआ क्या ? तो ' रतन ' बोले, नहीं चलो, घर चलते हैं डार्लिंग |

प्रस्तुत कहानी युवाओं में छिपी प्रतिभा पर प्रकाश ड़ालती है | साथ ही यह कहानी आदर्श प्राध्यापिका के गुणों पर प्रकाश ड़ालती है |

2.16 <u>तीसरी सुरंग</u> :-

जून,2005 की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित ' तीसरी सुरंग ' कहानी ' मुकेश वर्मा ' द्वारा लिखित है | प्रस्तुत कहानी पिता-पुत्र के संबंध का चित्रण करती है |

प्रस्तुत कहानी का नायक ' मैं ' पत्नी की मृत्यु से परेशान हो गया | उस समय उसका बेटा छः साल का है | वह माँ की तरह अंतर्मुखी बन गया है | पत्नी की मृत्यु के बाद पति को लगा, जैसे वह एक सुरंग से निकलकर खुले आसमान में साँस ले रहा है |

पत्नी की मृत्यु के बाद पति ने जिम्मेदारी निभाते हुए बेटे को प्रसिद्ध स्कूल के होस्टल में रखा | वह माँ की तरह हमेशा चुप बैठा रहता | अतः उसके दिल में क्या चल रहा है, यह बात पिता कभी जान नहीं सके | इस तरह कई वर्ष बीत गए | बेटा पच्चीस वर्ष का जवान तो पिता पचास वर्ष के अधेड़ उम्र के हो गये | पिता को उम्र के इस पड़ाव में अर्थात् दूसरी सुरंग में एक साथी की जरूरत महसूस होने लगी | जो उन्हें मिल गई पर उम्र और बेटे के खयाल से वे उसके साथ विवाह न कर सके |

बेटा पच्चीसवे जन्मदिन पर घर आया है | उसे अच्छी नौकरी मिली है | वह उसके प्रमाणपत्र लेने आया है | पिता बेटे को स्टेशन पर छोड़ने के लिए उसके साथ चल दिए | पिता सोचने लगे, मैं दूसरी औरत के बारे में बेटे को बताऊँ | उन्हें किसी दूसरे से पता चला है, बेटा उसके किसी दोस्त लड़की के साथ विवाह करनेवाला है | इस बारे में पूछूँ, कुछ और बातें करूँ | स्टेशन पर आते ही देखा, रेल छूटने लगी है | बेटे ने दौड़ते हुए रेल पकड़ी और पिता की ओर देखने लगा | पिता को लगा कि, वह ' तीसरी सुरंग 'में जा रहे हैं |

प्रस्तुत कहानी प्रतीकात्मक है | लेखक ने पिता की उम्र के तीन पड़ावों और उनमें आये बदलावों को ' सुरंग ' कहा है |

2.17 **' समरवंशी '** :-

जून,2005 की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित ' समरवंशी ' कहानी ' सोहन शर्मा ' द्वारा लिखित है | प्रस्तुत कहानी नक्सली विषय पर आधारित है |

शिशिरबाबू की बागानबाड़ी के खतरनाक काम में शंकर ने अपना कौशल्य दिखाया है | इस बात पर ' कामरेड गोम्स ' खुश हुए | उन्होंने शंकर को ' दीनू ' और ' मांझी ' के साथ कामरेड जगदीश के ड़ेरे पर पहुँचा दिया | शंकर और जगदीश ' ऑपरेशन त्रिभुज ' की सफलता बताने कामरेड प्रसाद से

मिलने चल दिए | जगदीश ने बताया, उनकी लड़ाई निजी संपत्ति के लिए न होकर शोषण और जुल्म का नाश करने के लिए है |

उधर तिश्टा नदी के तट पर स्थित ड़ेरे पर प्रसाद अपने साथी से बातें कर रहे हैं | प्रसाद ने कहा, सत्तालोलुप नरपिशाचों का नाश करना हमारा लक्ष्य है | अत: शोषक पूँजीवादी सत्ता को समाप्त करने के लिए सशस्त्र क्रांति अनिवार्य है | खोकन ने कहा, जनता हमारे रास्ते को गलत समझकर हमारी आलोचना करती है | प्रसाद ने कहा, इसलिए हमें अपने कार्य का प्रचार कर आधारक्षेत्रों का विकास करने के लिए जनता का विश्वास हासिल करना चाहिए | तभी जनता पुलिस की खबरी नहीं बनेगी | ये बातें होते समय शंकर और जगदीश वहाँ पहुँच गये | थोड़ी देर बाद वहाँ एक घायल सिपाही ने आकर बताया, कर्नल गांगुली के ड़ेरे को उड़ाकर पुलिस इधर आ रही है |

प्रसाद की सूचना के अनुसार हथियारों समेत ड़ेरे पर मौजूद आठ लोग जंगल से 'बाज बैठका ' स्थान पर आ गए | वहाँ से सड़क नजदीक है | तभी पुलिस का हमला हुआ | प्रसाद को दि. 15 अप्रैल, सन् 1929 की सुखदेव की मृत्यु की घटना याद आई | तब उन्होंने प्रसाद को वहाँ से भागने का आदेश दिया था, और प्रसाद भागा था | ये बातें सोचकर अपने लोगों को मरते देख उसने भी शंकर को भागने का आदेश दिया | ताकि शंकर इस समर अर्थात् युद्ध को आगे जारी रखे | शंकर भागता हुआ सड़क पर आ गया | पीछे से बीच-बीच में उसे गोलियों की आवाजें सुनाई दे रही है |

प्रस्तुत कहानी राष्ट्रप्रेम को जगानेवाली, राष्ट्रीयता से ओत-प्रोत क्रांति की कहानी है | लेखक अपनी कहानी को आज के इस आधुनिक युग में शहीद भगतसिंह, सुखदेव के संदर्भ से जोड़कर उन्हें श्रद्धांजलि समर्पित करता है |

2.18 **<u>संस्कार</u>** :-

जून, 2005 की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित ' संस्कार ' कहानी ' मायानंद मिश्र ' द्वारा लिखित है | ये प्रस्तुत कहानी स्वार्थी वृत्ति पर आधारित है |

सेवानिवृत्त हिंदी प्राध्यापक अमृतनाथ विनम्र, अनुशासन को जीवन में बड़ा महत्त्व देनेवाले, गृहस्थ जीवन से खुश रहनेवाले व्यक्ति हैं | उनका बेटा रामरतन सचिव की परीक्षा देने की तैयारी कर

रहा है | एक दिन उनके घर के सामने नगर निर्माण अधिकारी ' श्री धरणीधर नारायण प्रसाद राय ' का व्यक्ति लाल बत्तीवाली गाड़ी में आया | उसने बताया, मंत्रीजी अमृतनाथ जी से मुलाकात करना चाहते हैं |

श्री धरणीधर अमृतनाथ के छात्र रह चुके हैं | वह उद्दंड़ था | क्लास रूम में यथोचित व्यवहार न करना और कॉलेज की लड़कियों को छेड़ते रहने के कारण अमृतनाथ ने प्रिंसिपल साहब से उसे होस्टल एवं कॉलेज से निकालने के लिए कहा | पर मंत्री का बेटा होने से ऐसा नहीं किया गया तो अमृतनाथ जी ने सुपरिटेंडेंट पद का त्यागपत्र दिया था | अमृतनाथ उनसे मिलने नहीं जाना चाहते, पर पत्नी और बेटे के अनुनय पर उन्हें जाना पड़ा |

अमृतनाथ जी का आदरातिथ्य करने के बाद धरणीधर ने सर से एक भाषण लिखने की बिनती की | जो उसके चुनाव क्षेत्र में बने स्कूल शिलान्यास के उद्घाटन के समय उसे पढ़ना है | प्राध्यापक अमृतनाथ ने धरणीधर को उचित भाषण लिखकर दिया | तो धरणीधर ने उनसे अपने बारे में अभिनंदन हेतु कुछ लिखने को कहा तो प्राध्यापक अमृतनाथ ने इस बात को मना किया | वे रामरतन को नौकरी दिलाने की बात धरणीधर से करनेवाले थे पर मंत्रीजी ने यह बात घर आकर सुनेंगे, ऐसा बताया | अपना काम हुआ तो मंत्री फिर कभी वापस उनसे मिलने नहीं आये |

प्रस्तुत कहानी अवसरवादी राजनेता और नैतिक आदर्श पर चलनेवाले व्यक्ति का चित्रण करती है |

2.19 **बलात्कार** :-

जून,2005 की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित ' बलात्कार ' कहानी ' मुकेश कौशिक ' द्वारा लिखित है | प्रस्तुत कहानी ' बलात्कार ' समस्या पर आधारित है |

अन्नू के पापा अपने परिवार के साथ ' गोवा एक्सप्रेस ' से यात्रा कर रहे हैं | इनकी कोच की सारी सीटें आरक्षित हैं | जिनके पास रेल आरक्षण नहीं हैं, वे अपने सामान के साथ दरवाजे के पास बैठे हैं | किसी भी स्टेशन पर डिब्बे में और कोई चढ़ता तो उसे बैठने या खड़े होने के लिए बिल्कुल जगह नहीं है |

दिसंबर का महीना होने से सर्दी बहुत है | रात के बारह बजे गाड़ी ' झांसी ' स्टेशन पर रूक गई | एक महिला ने उनके डिब्बे के दरवाजे पर दस्तक देकर दरवाजा खोलने की बिनती की | अंदर जगह न होने से किसी ने उसकी सहायता नहीं की | गाड़ी चलने लगी | महिला की आवाज़ से लगा, वह दरवाजे के पायदान पर खड़ी है | थोड़ी देर बाद उसकी मिन्नतोंवाली आवाज़ बंद हो गई | सबको महिला के गिरने की आहट सुनाई दी | अन्नू के पापा को एहसास हुआ, अनजाने ही सही वे भी इस सामूहिक कांड़ में शामिल है |

मीरामार समुद्र तट बच्चों को दिखाने के बाद अन्नू के पापा ने समाचार-पत्र खरीदा | उसकी हेड़लाईन " आरक्षण का जन्मसिद्ध अधिकार प्राप्त दलित महिला आरक्षण न होने के कारण से मरी " [4] यह समाचार उन्होंने पूरा पढ़ा | तो उन्हें पता चला, वह दलित महिला गर्भवती थी | रेल से गिरने के बाद बच्चे को जन्म देकर वह मर गई | यह समाचार पढ़कर अन्नू के पापा के दिल को गहरी चोट लगी |

प्रस्तुत कहानी में छोटे प्रसंग को बड़ी यथार्थता के साथ चित्रित किया है | अस्तित्त्व का वर्णन प्रस्तुत कहानी में आया है |

2.20 <u>अनुजा</u> :-

जून,2005 की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित ' अनुजा ' कहानी ' अर्चना पैन्यूली ' द्वारा लिखित है | परिस्थिति से विवश हुई नारी का चित्रण प्रस्तुत कहानी में किया गया है |

अनुजा और सुधा दोनों हरिद्वार की सहेलियाँ विवाह के उपरांत डेनमार्क निवासी बन गई | उन दोनों की मुलाकात अचानक डेनमार्क के भारतीय मंदिर में हुई | प्रस्तुत घटना के बाईस वर्षों बाद अनुजा के पति की दुर्घटना में मृत्यु होने का समाचार सुधा को पता चला | ये बात उसे पार्टी में अन्य लोगों द्वारा पता चली | इस बात को सुनकर वह दु:खी हुई | फोन डायरी से अनुजा का नंबर और पता लेकर वह अपने पति के साथ रात के बारह बजे अनुजा के घर उसे सांत्वना देने चली गई | नरेंद्र की अंत्येष्टि के बाद उन दोनों सहेलियों का मिलना बंद हुआ, पर कभी-कभी फोन पर बातें होती रहती |

अनुजा के पति नरेंद्र की मृत्यु के सात-आठ महीने बाद सुधा को अनुजा ने अपने घर बुलाया | अनुजा के घर जाने पर सुधा ने देखा, अनुजा उसकी सहेली सपना को गालियाँ देकर विलाप कर रही है | सुधा ने उसे गालियाँ देने का कारण पूछा तो अनुजा ने बताया | बारहवी कक्षा के बाद उसके अभिभावकों की मृत्यु होने पर तीनों भाईयों ने उसे दुलार से सँभाला | उसका विवाह डेनमार्क निवासी नरेंद्र से किया | डेनमार्क जाने पर उसे पता चला कि, नरेंद्र की तलाकशुदा पत्नी है | जिसके दो बच्चों का खर्चा उसे देना पड़ता है | इस तरह इन सबके बाद अनुजा के लिए खर्च करने हेतु नरेंद्र के पास पैसे कम पड़ते | डेनमार्क की भाषा न आने से अनुजा को कोई नौकरी नहीं मिली | अतः विदेशी पर्यटकों को स्थायी आवास का परमिट देने के पति के व्यवसाय में वह साथ देने लगी | ' सपना ' के पति का खून पति के चचेरे भाई ने किया था | इस दुश्मनी का शिकार उसका बेटा ' समय ' न हो इसलिए वह बेटे के साथ डेनमार्क आई | यहाँ की निवासी बनने हेतु केवल धन पाने के लिए अपने व्यवसाय के अनुसार नरेंद्र ने अनुजा को तलाक देकर सपना से विवाह किया | स्थायी आवास का परमिट मिलते ही वह नरेंद्र को तलाक देगी, यह तय हुआ था | और इसी दौरान नरेंद्र की मृत्यु होने का फायदा उठाकर सपना ने नरेंद्र की जायदाद हथिया ली | अब अनुजा अकेली निराधार है | ये बातें सुनकर सुधा दंग रह गई | उसने अनुजा को उसके बच्चों के भविष्य को सुधारने का सुझाव दिया | उनके सहारे जीवन अच्छे ढ़ंग से जीने हेतु उसे प्रेरणा दी |

हर देश का कानून अनुशासित होता है, वरन् नरेंद्र जैसे स्वार्थी लोग गैरकानूनी तौर से स्थायी आवास का परमिट देने का व्यवसाय करेंगे | जीवन अर्थहीन, नीरस बनने पर मन आतंकित उद्वेलित हो उठता है तब बच्चों को देखकर जीवन जीने की कामना होती है | यह प्रस्तुत कहानी द्वारा बताया है |

2.21 <u>कंठ फटी बासुरी</u> :-

जुलाई, 2005 की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित ' कंठ फटी बासुरी ' कहानी ' रामेश्वर द्विवेदी ' द्वारा लिखित है |

प्रस्तुत कहानी का नायक कान्ह किसान है | वह अपने गाँव में परिवार के साथ खुशी से रहता है | उसी गाँव के मुखिया ' बिजली दुबे ' का बेटा ' सुल्तनवां ' गाँव की लड़कियों को छेड़ता है |

कान्ह की बहन ' सुरमो ' अपाहिज है | वह एक दिन काकी की बेटी के विवाह में गई | मेंहदी के कार्यक्रम के समय उसकी आँख लग जाती है | वह अकेली वहाँ सो जाती है | नींद से जागने पर अकेली वह घर जाने लगी तभी सुल्तनवां वहाँ आया | वह बहला-फुसलाकर उसे ले गया | सुरमी उससे अपनी इज्जत बचाने में असमर्थ रही | इस बात पर क्रोधित होकर ' कान्ह ' ने पंचायत बुलाई | अपनी बहन को घर में बंद किया | तो सुल्तनवां की माँ सबसे नजरें चुराकर सुरमी के पास आई और उसे जहर पिला दिया | उधर बिजली दुबे ने गाँव के पुलिस को रिश्वत देकर कान्ह को उसकी बहन की कत्ल के जुर्म में फँसाया | पुलिस के ड़र से कान्ह इधर-उधर मुँह छिपाता फिरता रहता | वह डकैत ' गगनदेउआ ' के गिरोह का साथी बन गया | एक दिन वह अपने गाँव आया | उसने रात को सुल्तनवां के घर को आग लगा दी | वह भाग गया | दूसरे दिन सुल्तनवां की लाश के टुकड़े हो गए थे | इस तरह कान्ह ने सुल्तनवां से बदला लिया |

प्रस्तुत कहानी में अमीरों द्वारा गरीबों पर होनेवाले अत्याचार, अमीरों द्वारा कानून के सिपाहियों को रिश्वत देकर गरीबों पर अन्याय करना, आदि समस्याओं को दर्शाया है |

2.22 ड्रैकुला :-

जुलाई,2005 की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित ' ड्रैकुला ' कहानी ' मुशर्रफ आलम जौकी ' द्वारा लिखित है |

प्रस्तुत कहानी की नायिका ' सोफिया ' की बड़ी ' बहन ' सुरैय्या ' ने ' अशरफ ' के साथ प्रेम-विवाह किया है | उन्हें ' इरम् ' नाम की एक बेटी है | सुरैय्या के विवाह के एक साल बाद उसके पापा की मृत्यु हुई | इस हादसे को बर्दाश्त न कर सकने से दूसरे साल उसकी माँ की मृत्यु हई | अत: बहन सोफिया और भाई नादिर की जिम्मेदारी सुरैय्या पर आ गई | नादिर ने नौकरी ढूँढ़ ली | पर सोफिया उम्र से छोटी है अत: वह अपनी बड़ी बहन के घर रहने लगी | वह अपने कमरे में सोती रहती या अपने

आपसे बातें करती रहती | एक दिन उसे आसेबी दास्तानों का प्रसिद्ध पात्र ' ड्रैकुला ' उसके कमरे में आता दिखाई दिया | जो उसका भ्रम है |

' इरम् ' के जन्मदिन पर शाम घर आने पर अशरफ ने देखा | जन्मदिन की कुछ भी तैयारी नहीं की गई है | अतः उसने अपनी पत्नी को डाँटा | प्रस्तुत घटना से ड़र कर सोफिया रोने लगी | तो नादिर उसे अपने साथ अपने घर ले आया | नादिर को अमरीका में नौकरी मिलनेवाली है, अतः वह जीजा, जीजी के साथ सोफिया को विवाह योग्य पति मिले इसलिए कोशिश करने लगे | बहुत कोशिशों के बाद और बहुत दिनों के बाद इंटरनेट से उन्हें एक रिश्ता मिला | उस अमीर, तंदुरुस्त मंगेतर ने यह शर्त रखी, विवाह से पहले एक -दूसरे को समझने के लिए एक रात वे साथ रहेंगे | उसकी यह शर्त सब लोगों के मन के विरुद्ध मान ली | सोफिया मंगेतर के साथ खुलेपन से पेश आई | यह देख मंगेतर सकपकाया और काँपते हुए चला गया | सोफिया ने स्वयं को आईने में देखा | उसे निड़र, आत्मविश्वासी लड़की नज़र आई | आज उसे लगा, ड्रैकुला वापस अपने कैफिन में लेटने जा रहा है |

सोफिया को पसंद करनेवाले युवा पर ' पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव दिखाई देता है | सोफिया अकेलापन, ड़र रुपी ' ड्रैकुला ' से बातें करती रहती | अंत में वह अपना आत्मविश्वास पाकर सामान्य जीवन जीने लगी | प्रस्तुत कहानी सोफिया की मानसिकता का बखुबी चित्रण करने में सफल हुई है |

2.23 <u>लेफ्टिनंट हॉडसन</u> : -

जुलाई, 2005 की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित ' लेफ्टिनंट हॉडसन ' कहानी ' रत्नेश्वर ' द्वारा लिखित है | प्रस्तुत कहानी मजदूरों पर होनेवाले अत्याचार का चित्रण करती है |

प्रस्तुत कहानी का नायक अभियंता है | उसका नाम ' संपूर्ण ' है | उसकी पत्नी ' दीया ' ' सन् 1857 से 1947 तक भारतीय संसाधनों का विकास ' इस विषय पर रिसर्च कर रही है | वह अपने शोध के लिए मद्दे ढूँढ़ रही है | उसने पढ़ा कि, लेफ्टिनंट हॉडसन मजदूरों पर अत्याचार करता था | उन्हें अंगारों पर दौड़ाता, बंदूक के कूंदे से उनकी रीढ़ की हड्डी तोड़ता, आँखें फोड़ता था | तभी उसके पति को फोन पर यह समाचार मिला कि, फ्लैट बन रहे जमीन पर खुदाई के समय अचानक कंकाल मिले | यह बात पुलिस को पता चली तो उसने जमीन पर चल रहे काम को बंद किया | यह जमीन

' बाबा मल्होत्रा कंन्स्ट्रक्शन ' ने खरीद कर वहाँ नगर निर्माण करने का आयोजन किया गया है | एक फ्लैट की कीमत 12 करोड़ रूपए है | कई लोगों ने तो एड़वांस दिया है | उसकी जिम्मेदारी दीया के पति अभियंता ' संपूर्ण ' पर है |

फोन पर समाचार मिलने के उपरांत अभियंता ' संपूर्ण ' कंकाल मिली जमीन देखने आता है | उसने देखा वहाँ पर पत्रकार, पुलिस फोर्स, रेपिड़ एक्शन फोर्स एवं बिहार के मजदूरों के गुठ पहुँचे हैं | कंकाल जाँच के लिए ' फोरेसिक साईंस लेबोरेटरी ' में भेजे गए हैं | वहाँ से पता चला कि, ये कंकाल लगभग सन् 1856 से 1878 के बीच के हैं, जो मजदूरों के हैं | एक महिला कंकाल पर ' रंड़ी ' शब्द लिखा है | डी.एन.ए. टायपिंग से पता चला कि, ये बिहार के मिथिला, भोजपुर के इलाके के मजदूर थे | कई बच्चों की मौत भूख से और दांत की बीमारी से हुई है | कई मजदूरों की मृत्यु ' ओस्टियोमालायसिस ' से अर्थात् निरंतर कुपोषण और भारी बोझ उठाने से हुई थी | इस प्रकार डॉ.भल्ला और डॉ.सुषमा ने रिपोर्ट बताई |

उधर दीया अपने लिए मद्दे चिन्हांकित करती है, ईस्ट इंड़िया कंपनी के सुधार कार्यक्रम के बाद भारत में सैनिक, शिक्षा, प्रशासनिक विकासों के लिए काम शुरू हुआ | सन् 1857 में विद्रोही सैनिकों ने दिल्ली पर आक्रमण किया | उनका साथ मजदूरों ने दिया | पर सत्ता अंग्रेजों के हाथ आ गई | अत: मजदूरों से प्रतिशोध लेने के लिए उन पर अंग्रेज अधिकारियों ने अत्याचार किए |

उधर ' बाबा कन्स्ट्रक्शन ' की जमीन पर पुलिस और मजदूरों में हाथापायी हुई | जिसमें अभियंता ' संपूर्ण ' जख्मी हो गया | उसे होश आया, तब दीया उसके पास खड़ी है |

फोरेसिक सायन्य, डी.एन.ए. आदि नई युग की देन है, जिसका लेखक ने प्रस्तुत कहानी में प्रयोग किया है | इन शोध-कार्य के माध्यम से लेखक ने अंग्रेजों द्वारा भारतीय जनता पर हुए अत्याचार का चित्रण प्रस्तुत कहानी में किया है |

2.24 <u>शॉर्ट कट</u> :-

अक्तूबर,2005 की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित ' शॉर्ट कट ' कहानी ' गुलजार ' द्वारा लिखित है | प्रस्तुत कहानी यात्रा करते समय आये कटू अनुभवों पर आधारित है |

प्रस्तुत कहानी में भूशन, तरन और लेखक बानपुर से प्रयाग की यात्रा कर रहे हैं | तीनों ने किराये पर गाड़ी लेकर दिल्ली से हरिद्वार तक यात्रा करना तय किया | वहाँ पहुँचते-पहुँचते गाड़ी बिगड़ जाने के कारण वे सब महंतजी की गाड़ी से ह्रषिकेश तक गए | गाड़ी सुबह आई, फिर यात्रा प्रारंभ हुई | चालक ' वीर सिंह ' ने बताया 'बानपुर ' जानेवाला ' शॉर्ट कट ' रास्ता कच्चा व कठीन होने से यात्रा तकलीफदेह होगी | एक पुरानी हेरलड़ गाड़ी जोर से उनके पास से गुजर गई | यह देख तीनों दोस्तों ने चालक से ' शॉर्ट कट ' से गाड़ी ले जाने को कहा |गाड़ी चालक ने उनकी बात मानी | आगे एक स्थान पर चालक ने गाड़ी रोकी | उसने नीचे वादी में देखा | यह देखकर यात्री गाड़ी से नीचे उतरे | वादी में वह हेरलड़ गाड़ी गिर चुकी है, चालक भी दिख रहा है | साथी ने पूछा, " कोई चांस होगा ?" [5]
चालक बोला, " जिंदगी में भी शार्ट कट मार गया |" [6]

प्रस्तुत कहानी में गाड़ी तेज चलाकर दुर्घटना होने की समस्या पर प्रकाश ड़ाला है | ' जिंदगी में भी शॉर्ट कट मार गया, ' इस वाक्य से पता चलता है कि, मृत्यु जैसा जीवन का अंतिम सत्य व्यंग्य के साथ लेखक ने प्रस्तुत किया है |

2.25 <u>इंतजार</u> :-

अक्तूबर, 2005 की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित ' इंतजार ' कहानी ' कृष्ण बिहारी ' द्वारा लिखित है | प्रस्तुत कहानी में ' परित्यक्ता नारी ' की समस्या चित्रित की है |

गोरखपुर से तीन-चार किलोमीटर की दूरी पर ' चाची ' का गाँव है | उनका संयुक्त परिवार है | उनके घर में दादाजी उनका रेल में नौकरी करनेवाला अविवाहित बड़ा बेटा, कानपुर नौकरी करनेवाला मझला बेटा और चाचा आदि रहते हैं | मझला बेटा अपने परिवार को लेकर कानपुर चला गया | चाचा का विवाह किया गया | चाचा हाईस्कूल में पहले दो बार फेल हो गए | तो चाची ने चरखा कातकर, सूत बेचकर चाचा को पढ़ाया, फिर भी वे और दो बार फेल हो गए | चाची के कहने पर चाचा को उनके मझले भाई कानपुर ले गए | वहाँ उन्हें अच्छी नौकरी मिली | उनकी तीन संतान हैं -- अवधेश, विमला, सर्वेश | चाचा अधिकतर अपने परिवार से मिलने गाँव नहीं जाते | इसलिए चाची

को कानपुर लाने की बात होने लगी | तो चाचा गुमशुदा हो गए, कहीं चले गए जो वापस नहीं आये | सब ने उन्हें ढूँढ़ा पर वे नहीं मिले |

चाचा के गुमशुदा होने पर ससुराल में ही रहकर स्वाभिमान के साथ चाची ने अपने बच्चों का लालन-पालन किया और उनकी गृहस्थी बसाई | बहुएँ अलग रहने लगी, तो चाची फिर से अकेली हो गई | अवधेश की दुर्घटना में और विमला की प्रसव-पीड़ा में मृत्यु हुई | इससे चाची पर दु:ख का पहाड़ गिर गया | चाची से मिलने कानपुर के जेठ का बेटा ' बापू ' आया | वह विदेश में नौकरी करता है | चाची ने उससे बातें की | उसका आदरातिथ्य किया | बापू ने जबरदस्ती चाची के हाथ कुछ रुपए थमा दिए | चाची रोने लगी तो बापू ने उसे धीरज रखने को कहा | वह सोचने लगा, चाची चाचा का बहुत इंतजार कर चुकी है | उनका कोई दोष न होते हुए चाचा उन्हें छोड़कर कहीं चले गए | और अब तक घर नहीं लौटे हैं |

प्रस्तुत कहानी में स्वाभिमानी नारी, आत्मनिर्भर, प्रेरणादायी एवं परित्यक्ता नारी, वृद्ध, अकेली नारी का चित्रण किया हैं |

2.26 **<u>बेतरतीब</u>** :-

अक्तूबर, 2005 की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित ' बेतरतीब ' कहानी ' अल्पना मिश्र ' द्वारा लिखित है | बेतरतीब का अर्थ है ' अस्तव्यस्तपन ' | जीवन की अस्तव्यस्तता प्रस्तुत कहानी में चित्रित है |

प्रस्तुत कहानी में भगवतशरण और रत्ना अपनी तीन बेटियों और एक बेटे के साथ रहती है | पति पत्नी में आवश्यकता के अनुरुप बोलने का व्यवहार होता है | बड़ी बेटी ने हाईस्कूल की परीक्षा पास की | आगे की पढ़ाई के लिए वे बेटी को शहर इसलिए नहीं भेजते क्योंकि, अभी वह उम्र में छोटी है और वह लड़की है | वे उसे कहते हैं, बारहवी कक्षा के बाद विश्वविद्यालय में उसका दाखिला जरुर करवाएँगे | मन न चाहते हुए उन्होंने बेटियों को दूर भेजा | वे अपनी-अपनी पढ़ाई पूरी करके नौकरी करने लगी | बेटे को मुंबई शिक्षा के लिए भेजते समय पापा को कोई हिचकिचाहट महसूस नहीं हुई |क्योंकि वह लडका है, जो उनका वंश आगे बढायेगा, उनका नाम रोशन करेगा |

बड़े होने पर सब बच्चे माँ-बाप से शिक्षा एवं नौकरी हेतु दूर है | भगवतशरण घर के पीछे की खाली जगह में सब्जी उगाते या पड़ोस के मास्टरजी से चर्चा करने जाते | रत्नाजी अकेली पैदल घूमने जाती है | छुट्टियों में बेटियाँ जब घर आती है तो, नींद और आलस्य के कारण अभिभावक से अधिक बातें नहीं कर पाती | काम में भी सहायता नहीं करती | माँ-पिता के वैवाहिक, नीरस जीवन को देखकर बेटियाँ विवाह ही नहीं करना चाहती |

प्रस्तुत कहानी में लिंगभेद और वृद्धावस्था का नीरस दांपत्य जीवन आदि समस्याओं का चित्रण किया गया है |

2.27 <u>यही मुंबई है</u> :-

अक्तूबर, 2005 की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित ' यही मुंबई है ' कहानी ' हरिश्चंद्र बर्णवाल ' द्वारा लिखित है | प्रस्तुत कहानी दृष्टिहीन बालक पर आधारित है |

बारह साल का ' महादेव ' जन्म से अंधा है | उसकी शुश्रूषा करनेवाली दाई काम छोड़कर चली गई है | मैड़म से उसे पता चला, काम मिलने के कारण सारी दाईयाँ मुंबई चली गई है | वह जिस दृष्टिहीन बच्चों के स्कूल में पढ़ता है, उस स्कूल की ' सैर ' मुंबई जानेवाली है | मम्मी के मनाने पर पापा ने महादेव को सैर जाने की अनुमति दी |

यात्रा करते समय रेल की बोगी में महादेव के सब दोस्त आपस में बातें कर रहे हैं | सुदर्शन ने मुंबई के भीड़ की बात बताई | त्रिलोचन ने, वह फिल्म नगरी है, ऐसा कहा | मधुर ने फिल्मों में अभिनय करने की इच्छा दर्शायी | महादेव बोला वह मुंबई में दाई को ढूँढ़ेगा, जिससे माँ को तकलीफ न हो | सुधांशू ने नेताओं, गुंड़ों का शहर मुंबई है ऐसा बताया | अब बोगी में भीड़ बढ़ने लगी | किसी ने मुंबई नोटों का, समंदर का, गेट वे ऑफ इंड़िया का शहर है ऐसा बताया | मैड़म ने स्टेशन नजदीक आने पर अपना सामान लेकर सब यात्रियों के बाद बच्चों को उतरने की हिदायत दी | महादेव ने सामान के साथ पचास रुपए के नोट की जाँच की तो उसे पता चला, वह गुम हो गई है | नोट ढूँढ़ने के चक्कर में वह गिर पड़ा | पैर फैक्चर होने से पहले अस्पताल फिर घर लाया गया |

सुबह से महादेव की मम्मी परेशान है | यह देख कर महादेव को बुरा लगा | वह नौकरों को, अपने बेटे अभिषेक को डाँट रही थी | उसने महादेव को भी दवा खाने के लिए डाँटा | थोड़ी देर बाद उसके मामा घर आ गए | तो मम्मी उन्हें बता रही है, " हां मुंबई तो पूरा घूम ही लिया, अपने साथ भी ले आया है, हम सबको दिखाने " [7] मम्मी की आवाज महादेव के कानों में गूँज रही है |

' यही मुंबई है ' कहानी में बच्चों के संवादों के माध्यम से लेखक ने महानगरीय समाज, राजनीति, अर्थ आदि पक्षों पर प्रकाश ड़ाला है |

2.28 <u>कुण्ड़लिनी</u> :-

अक्तूबर, 2005 की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित ' कुण्ड़लिनी ' कहानी ' मनोज कौशिक ' द्‌वारा लिखित है | प्रस्तुत कहानी आत्मज्ञान के नाम पर प्रतिष्ठा प्राप्त करनेवाले साधुगिरी पर आधारित है |

' नरसिंह बाबा ' ने साधक ' सदानंद ' को समझाया, कुण्ड़लिनी जागृत करने में तुम अपनी जिंदगी खराब मत करना | भगवान निराकार हैं | वे ढूँढ़ने पर दिखाई नहीं देते | हमें हमेशा चतुर रहकर जीवन का हर पल जीना चाहिए | उनके अनुरोध पर कटरमाला आश्रम में स्थित ' महंथ नित्यानंद' जी से मिलने सदानंद उनके मठ चला आया |

मठ में ' चेलाराम ' भगत की बातें सबको सुननी पड़ती है | वह अपनी बातों से ' नित्यानंद ' जी को वश कराकर उन्हें मनाता है | सदानंद ने नित्यानंद जी से आश्रम में सेवाएँ प्रस्तुत करने की अनुमति ली | सदानंद नित्यानंद द्‌वारा दी गई सेवा हिसाब-किताब रखना, भजन करना इन्हें बखुबी से निभा रहा है | ये बातें चेलाराम को पसंद नहीं आई | नित्यानंद जी ने चेलाराम को महाशिवरात्रि के दिन बृहद् अनुष्ठान का संचालन एवं रथ निकालने के लिए कहा | चेलाराम ने अनुष्ठान की तैयारी हेतु सब भगतों को सफाई करना, मंड़प सजाना, रंगोली बनाना ये सेवाएँ दी | यज्ञ की तैयारी की | जान-बूझकर सब भगतों के सामने सदानंद का अपमान किया | उस से पहले से ही आतंकित अन्य भगतों ने सदानंद का साथ देने की बात कही |

महाशिवरात्रि का समारोह संपन्न होने के उपरांत शिव की मूर्ति के सामने ' नित्यानंद ' विराजमान हुए | तब सदानंद उनके सामने आकर बेहोश हो गया | नित्यानंद ने उसकी नाड़ी परीक्षा करके मृत घोषित किया | तभी सदानंद उठकर खड़ा हुआ | सब दर्शनार्थी विस्मयबोधित हो गए |सबने नित्यानंद का जयघोष किया | नित्यानंद जी ने सदानंद को अपने कक्ष में बुलाया तब बाहर अन्य भगत चेलाराम को घसीटकर उसकी कुटिया में ले गए | उसके मुँह में कपड़ा ठूसकर बाहर से ताला लगाया | उधर सदानंद ने नित्यानंद जी की कुटिया को ताला लगाकर उनके समाधिस्थ होने का समाचार अन्य भगतों को बताया | थोड़े दिनों बाद नित्यानंद जी की मृत्यु हुई | कुछ दिनों के बाद, आश्रम की जगह बड़ा मंदिर बनवाया गया, नित्यानंद जी की मूर्ति स्थापित की गई | अब रसोई के लिए आश्रम में दासियों की व्यवस्था की गई |परमशिष्य सदानंद की कीर्ति दूर तक फैल गई |

प्रस्तुत कहानी में मठों में चलनेवाने अनाचार, अत्याचार, धर्म के नाम पर होनेवाला शोषण इन समस्याओं पर प्रकाश ड़ाला है |

2.29 <u>बुध्दू</u> :-

अक्तूबर, 2005 की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित ' बुध्दू ' कहानी ' रोशन प्रेमयोगी ' द्वारा लिखित है | प्रस्तुत कहानी बाल मनोविज्ञान पर आधारित है |

प्रस्तुत कहानी में पाठशाला में प्रार्थना के बाद ' बुध्दू ' अर्थात ' बुध्दिमान विश्वकर्मा ' कक्षा में पहले आता है | उसने देखा स्मृति के बेंच के नीचे उसका पेन गिरा है | तो उसने वह पेन उठाया और स्मृति के बैग में रखने लगा, यह घटना स्मृति ने देखकर उस पर चोरी का इल्जाम लगाया | गुरुजी द्वारा उसे सजा मिली | ' राम अनुज गुरुजी ' ने उसे माफी माँगने को कहा तो उसने मना किया क्योंकि , उसने चोरी नहीं की थी |

अब बुध्दू और स्मृति में दोस्ती हुई | बुध्दू ने स्मृति से पूछा, कक्षा के सब छात्र उससे अच्छा व्यवहार करें, इसलिए उसे क्या करना होगा | स्मृति ने कहा बड़े बाल काटकर उन्हें छोटा करो, उनमें तेल लगाओ, हर रोज एक ही शर्ट पहनने के बजाय दो-तीन शर्ट लो | बुध्दू ने बताया, उसके नाना ने

उसे गोद लिया है, वह उन्हीं के साथ रहता है | वह नाना की आँखों का ऑपरेशन करने के लिए डॉक्टर बनना चाहता है |

कक्षा में ' भूमिका ' के जन्मदिन पर सभी बच्चों ने अध्यापिका को उपहार दिये | बुध्दू ने अपने द्वारा बनाया हुआ लकड़ी का उपहार देखकर भूमिका ने उसे कहा, " पढाई छोड़ दो और जाओ बढ़ईगीरी सीखो |" [8] बुध्दू का कक्षा में किया गया यह अपमान स्मृति को अच्छा नहीं लगा | अतः उसने ' राम अनुज गुरुजी ' से उनकी शिकायत की | भूमिका जी को अपनी भूल पर पछतावा हुआ | उन्होंने बुध्दू को आशीष दिया | द्विवेदी गुरुजी ने कक्षा में ' न्यायी शेर ' की कहानी सुनाई तो बुध्दू ने उसकी सीख बताई | उसकी मेधावी बुध्दि को देखकर कक्षा के सभी बच्चे उसे ' बुद्धिमान ' कहने लगे |

प्रस्तुत कहानी में बच्चों के हित एवं भविष्य के लिए सजग रहनेवाले आदर्श गुरुजी का चित्रण किया गया है |

2.30 **बास्सा कल्लू गिर का चोगा** :-

नवम्बर,2005 की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित ' बास्सा कल्लू गिर का चोगा ' कहानी ' हरिपाल त्यागी ' द्वारा लिखित है | प्रस्तुत कहानी शोषण की समस्या पर आधारित है |

' बास्सा कल्लू गिर का चोगा ' इस शीर्षक का अर्थ है- गु-साई ' कल्लू गिर ' ने अपनी कला पेश करते हुए पहना हुआ बादशाही पेहराव | कल्लू पहले सांग कंपनी में काम करता था | वह कंपनी किसी कारण टूट गई | तनख्वाह न मिलने से कल्लू चांदी की मूठवाली छड़ी और नाटक में पहना जानेवाला बादशाही चोगा चूराकर घर ले आया | ये चोरी की बात कंपनी के मालिक को पता चली तो वह कल्लू के घर आया | उसने कल्लू की कला को जानकर उसे वह बादशाही चोगा उपहार रुप में दिया | अब कल्लू अपने गाँव में लोक कला पेश करता | सारे गाँव के लोग उसकी कला के दिवाने थे | कल्लू का गाना सुनने के कारण गाँव के लोग अपने काम पर ध्यान नहीं दे पाते | यह बात गाँव के मुखिया ' लंबड़दार ताऊ ' को पसंद नहीं आई | उसने अफवा फैला दी कि, कल्लू बादशाही चोगा पहनकर हारमुनियम बजाते हुए गाना गाता है तो सारे लोगों का काम से ध्यान इसलिए छूटता है कि,

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

कल्लू के चोगे में काला जादू है | इससे लड़के और लड़कियाँ बिगड़ रही हैं | यह बात सुनकर गाँववालों ने होली के दिन कल्लू को शराब पिलाकर उसका चोगा जला दिया | जब इस का पता उसे चला तब वह रोने लगा |

सामान्य लोग लोककला को जीवन भर सँभालकर अपना निर्वाह करते हैं, इस बात का सुंदर चित्रण प्रस्तुत कहानी में किया है | उच्च वर्ग द्‌वारा गरीबों का शोषण, गरीबों का विनाश करनेवाली शराब इन बातों की ओर प्रस्तुत कहानी ध्यान आकृष्ट करती हैं |

2.31 <u>प्रतिरोध</u> :-

नवंबर, 2005 की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित ' प्रतिरोध ' कहानी ' शैलेन्द्र सागर ' द्‌वारा लिखित है | प्रस्तुत कहानी नायिका नंदिता के मानसिक अंतर्विरोधों को दर्शाती है |

प्रस्तुत कहानी की नंदिता का विवाह बैंक अफसर ' सुबोध ' के साथ हुआ | वह अपनी पत्नी ' नंदिता ' पर हमेशा शक किया करता है| उससे हर छोटी बात को लेकर झगड़ा करता | नंदिता गर्भवती रहती है, तब एक बार उस पर गुस्से से हाथ उठाता है | प्रस्तुत बात से ड़र कर नंदिता मायके चली आती है | अपने बेटे के जन्म होने की बात सुनकर भी सुबोध पत्नी से मिलने नहीं आता | वह कभी - भी उससे मिलने नहीं आता | नंदिता अपने बेटे और स्वयं की प्राध्यापिका की नौकरी में ही जीवन व्यतीत करने लगी | बेटा बड़ा होने पर शिक्षा के लिए होस्टल रहने लगा तो नंदिता अकेली हो गई |

कॉलेज के कार्यक्रम के दौरान नंदिता की मुलाकात ' दीपंकर ' के साथ हुई | उनमें पहले दोस्ती और फिर प्रेम हुआ | उसने नंदिता से बताया, वह उन दोनों के रिश्ते को समाज के सामने नाम नहीं दे पायेगा | उसे शारीरिक सुख के बजाय मानसिक सुख चाहिए | नंदिता को दीपंकर का साथ और उसका प्यार चाहिए | नंदिता को दीपंकर के पास जाने पर गलती का एहसास होता | उसके संस्कार इस बात से प्रतिरोध करते | फिर नंदिता ने अपने मन को समझाया, वह दीपंकर से प्रेम करती है, तो उससे मिलने में कोई बुराई नहीं है | अत: वह दीपंकर को फोन लगाकर उसे मिलने के लिए बुलाती है | उसका इंतजार करती है |

' प्रतिरोध ' कहानी में ' परित्यक्ता नारी ' की समस्या को दर्शाया गया है |

2.32 **लू में खिला फूल** :-

नवंबर, 2005 की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित ' लू में खिला फूल ' कहानी ' राजेश झरपुरे ' द्वारा लिखित है | प्रस्तुत कहानी दांपत्य जीवन के एक छोटे प्रसंग पर आधारित है |

सेवानिवृत्त ' अरविंद सिंग ' अपनी पत्नी ' कुंती ' के साथ बेटी के नातिन के जन्म अवसर पर शगुन लेकर जा रहे हैं | वे दोनों बस स्टैण्ड़ पर खड़े हैं | ' अरविंद ' जी को यात्रा करना पसंद नहीं है | बस स्टैण्ड़ पर धूप बहुत होने से वे ठण्डे ज्यूस की दो बोतलें ले आये | अरविंद की बोतल खत्म हुई पर उनकी पत्नी कुंती की नहीं हुई | अतः उनको अपनी पत्नी पर गुस्सा आया | वे क्रोधी स्वभाव के हैं | कुंती गँवार, विनम्र, पतिव्रता नारी हैं |

तेज धूप में बस स्टैण्ड़ पर खड़ा रहना अरविंद को बिल्कुल पसंद नही आया | तो वे बोले, ये मुझे बिल्कुल पसंद नहीं | तो उनकी पत्नी ने भी वैसा ही कहा | पति ने हँसते हुए कहा, मुझे तो यह पसंद है | तो पत्नी ने झट् से वैसा ही कहा | इस बात पर कुंती की गोद में सर रखकर अरविंद हँसने लगे |

दांपत्य जीवन में पति-पत्नी एक -दूसरे के साथ कभी प्रेम से व्यवहार करते हैं तो कभी वे गुस्सा भी करते हैं | इन क्रिया-प्रतिक्रियाओं में उनके मन में एक-दूसरे के प्रति प्रेम बढ़ता जाता है | इस पहलू पर लेखक ने प्रस्तुत कहानी के माध्यम से प्रकाश ड़ाला है |

2.33 **लाशें** :-

नवम्बर,2005 की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित ' लाशें ' कहानी ' रश्मी वी.आर. ' द्वारा लिखित है |

प्रस्तुत कहानी का नायक लाशघर के फाटक का पहरेदार है| विवाह के उपरांत हनीमून की रात उसकी पत्नी ने उसे कहा, उसके शरीर से लाश की बू आ रही है | और वह सो गई | पत्नी की बातों से दु:खी हुआ पहरेदार उसी रात फाटक के सामने पहरा देने आता है | वह दिवास्वप्न देखता है, जिसमें

गड्ढ़ा खोदनेवाले व्यक्ति की लाश को विनती करने पर उसने बाहर निकाला | इस बात को देखकर वहाँ की वेश्या की लाश भी उसे रिहा करने को कहती है | वह उसे रिहा करने के बाद उसके साथ प्रेम के कुछ पल व्यतीत करता है| मूँछवाले आदमी की लाश को भी वह रिहा करना चाहता है, पर स्मारक बनने की आशा से वह मना कर देता है |

प्रस्तुत कहानी ' फंतासी ' शैली में लिखी गई है |

2.34 <u>चीख</u> :-

नवंबर, 2005 की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित ' चीख ' कहानी ' अजय नावरिया ' द्वारा लिखित है | प्रस्तुत कहानी दलित युवक पर आधारित है |

नायक गाँव में रहनेवाला मातंग का बेटा चर्च के फादर के अनुरोध पर मिशनरी स्कूल में पढ़ने लगता है|गाँव के पटेल द्वारा बेटे की पिटाई की जाने पर वह ' नागपुर ' आया |फादर की चिठ्ठी के कारण उसे वहाँ पढ़ने का मौका मिला | बारहवी कक्षा के उपरांत स्कॉलरशिप न मिलने से वह आगे की पढ़ाई हेतु वह मुंबई चला गया | वहाँ टयूशन लेना, पार्लर में काम करना, इससे पढ़ाई के लिए पैसे मिलने लगे | वह बी.ए. पास हो गया | मसाज के बाद दलित युवक को अवैध यौन संबंध के लिए राजी किया गया | इससे उससे अधिक पैसे मिलने के कारण वह खुश रहने लगा | वह गाँव बाबा से मिलने आया | वहाँ ' बाबा धुजनाथ ' के दर्शन करते समय उन्होंने बकरी के माध्यम से उसे कहा, " भूख लगे तो जहर नहीं खाना चाहिए |" [9] शहर आने पर मिसेज देशमुख ने तनख्वाह देकर नायक को अवैध यौन संबंध रखने के लिए अपने पास रखा | वह पार्टी में आई औरतों को उनकी गाड़ी तक पहुँचाने का काम भी करने लगा | मिसेज देशमुख की पार्टी में उसकी मुलाकात डी.सी.पी. वरुण की पत्नी ' शुचिता ' से हुई | पति ' वरुण ' द्वारा पत्नी का हक़ न मिलने से शुचिता ने अपने लिए नायक को चुना | वे दोनों होटल में एक रात साथ रहे | ये बात मिसेज देशमुख को पसंद नहीं आई | अतः उसने प्रस्तुत बात डी.सी.पी. वरुण को बता दी | उसने होटल आकर नायक को गोली मार दी |

प्रस्तुत कहानी द्वारा लेखक ने ' पुरुष वेश्या की ' समस्या को दर्शाया है |

2.35 **<u>लौटा तो भय</u>** :-

दिसंबर, 2005 की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित ' लौटा तो भय ' कहानी ' भालचंद्र जोशी ' द्वारा लिखित है | प्रस्तुत कहानी ' अंतर्जातीय विवाह ' पर आधारित है |

भुवन को अपने साक्षात्कार का परिणाम पता चला | उसके दोस्त ' कमल ' को सात लाख रुपए देने पर नौकरी दी गई | उसे पता चला है कि, नौकरी के लिए योग्यता के बजाय हैसियत जरुरी होती है | वह घर आया | घर आने पर उसे पता चला कि, बड़ी बहन तारा दीदी चमार जयंत मिश्रा के साथ विवाह करने के लिए घर से भाग गई है | उसने ऐसा चिठ्ठी में लिखा है | बेटी द्वारा बेइज्जती के गम से भुवन के पिता का ब्लड़प्रेशर बढ़ने लगा | अतः माँ ने भुवन को मझली बेटी ' हर्षा ' को घर वापस लाने मामा के पास जाने को कहा |

भुवन पहले ' तारा दीदी ' से मिलने उसके घर गया | वह जानता था कि, दीदी जयंत से प्रेम करती है और अंतर्जातीय विवाह के पक्ष में भी है | उसने भुवन का आदरातिथ्य कर उसे समझाया ब्राह्मणी का दलित युवा के साथ विवाह होना अच्छी बात है | तभी फोन द्वारा पिता की मृत्यु का समाचार भुवन को पता चला | तारा दीदी भी पति के साथ लाल बत्तीवाली गाडी में आई | उसके पति के पद को देखकर सब उसकी चापलूसी करने लगे | भुवन ने अनुभव किया पैसे के सामने दुनिया झुकती है | अंत्येष्टि क्रिया के बाद भुवन से उसकी प्रेमिका ' अंजली ' मिलने आई | वह भुवन को सांत्वना देने नहीं तो उसके फोटो और डायरी लेने आई है | वह भुवन के जीवन से हमेशा के लिए चली गई |

प्रस्तुत कहानी में अंतर्जातीय विवाह और नौकरी प्राप्त करने हेतु युवा पीढ़ी में पनपनेवाला भ्रष्टाचार, युवा पीढ़ी की मानसिकता आदि समस्याओं को दर्शाया हैं |

2.36 <u>उलटबांसी</u> :-

दिसंबर , 2005 की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित ' उलटबांसी ' कहानी ' कविता ' द्‌वारा लिखित है | ' उलटबांसी ' का अर्थ है- " ऐसा पद या कविता जिसका अर्थ शब्दार्थ से विपरीत हो, परंतु जिसका कुछ गुण, आशय भी हो |" [10] प्रस्तुत कहानी बूढ़ी, अकेली अपूर्वा की माँ की कहानी है |

अपूर्वा की परवरिश उसकी माँ ने बेटों की तरह की है | उसने अनुज के साथ प्रेम विवाह करने की बात माँ को बता दी | माँ ने ये बात मान ली, पर उसके पिता और भाईयों ने इसका विरोध किया | माँ ने उन्हें समझाया, तो सब मान गये | अपूर्वा का प्रेम विवाह हो गया | कुछ दिनों बाद, तीनों भाईयों के विवाह हुए | उन्होंने अपनी-अपनी अलग गृहस्थी बसाई | अब पिता की मृत्यु के पश्चात् माँ अकेली हो गई | मोतियाबिंद से वह परेशान हो गई | बुढ़ापे में उसका सुख-दु:ख समझनेवाला साथी उसे मिल गया तो उसने अपने बेटों से स्वयं के विवाह की बात की | उसके बेटों ने इस बात का विरोध किया | अपूर्वा भी प्रस्तुत फैसले से चौंक गई | उसने मन में सोचा, " माँ कबीर की उलटबांसियों को कहती, गुनगुनाती उन उलटबांसियों सी ही उलट ली अपनी जिंदगी ?" [11] बेटों ने माँ को समझाया पर वह अपने फैसले पर अटल रही | अतः तीनों बेटे क्रोधित होकर वहाँ से चले गए | अपूर्वा ने प्रस्तुत बात अपने पति को बता दी, उसने अपूर्वा को कहा, माँ का साथ देकर तुम उनके विवाह में शामिल हुई तो फिर कभी मेरे घर मत आना | फिर भी अपूर्वा और उसके भाई की बेटी निशा ; माँ के दूसरे विवाह में शामिल हुई | माँ का विवाह होने के बाद अपूर्वा रेल से अपने घर चली | उसके मन में बार-बार एक ही सवाल आ रहा है कि, अनुज अब उसे घर में लेंगे या नहीं ?

तीन पीढ़ियों में वैचारिक स्तर पर आई प्रगल्भता इन बातों को प्रस्तुत कहानी दर्शाती है | प्रस्तुत कहानी में बुढापे एवं अकेलेपन की समस्या को दर्शाया है |

2.37 **<u>कैसे हो पार्टनर</u>** :-

दिसंबर , 2005 की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित ' कैसे हो पार्टनर ' कहानी ' नवनीत मिश्र ' द्‌वारा लिखित है | प्रस्तुत कहानी जिप्पी की मानसिकता और उसके व्यवहार पर आधारित है |

प्रस्तुत कहानी के नायक ' गणेश प्रसाद 'उर्फ ' जिप्पी ' श्रम बिल्कुल नहीं करते | उनका सारा खर्च उनके बड़े भैय्या उठाते हैं | अब भैय्या ने जिप्पी से कहा, स्वयं का खर्च स्वयं करो | जिप्पी सारा संसार अपना घर मानते हुए हर चीज पर अपना अधिकार ग्रहण करते है | हर व्यक्ति को ' पार्टनर ' कहकर संबोधित करते हैं | उनकी प्रेमिका 'उषा ' ने उनका निकम्मापन देखकर बैंक अफसर से विवाह किया | जिप्पी लोगों से चंदा मांगते | वे कहते, तुम लोग जो अधिक कमाते हो, उस पर सबका अधिकार है | जिप्पी मालिक और कामगारों के बिगड़े संबंध अच्छे बनाने का प्रयास करते, जिससे उन्हें पैसे मिलते हैं | अब ' कामगार दिन ' को मजदूरों को हक प्राप्त हुआ | इससे उनसे फायदा उठाना भी बंद हो गया | जिप्पी अब निकम्मा घर में बैठा रहने लगा | माँ ने अपने बेटे की कुण्ड़ली ज्योतिषी को दिखाई तो उसने अनहोनी घटने की बात बताई | इसके उपाय हेतु भगवान का जाप करने को कहा गया | जिप्पी मृत्यु के भय से जाप करते पर मन में संसार के विषय में विचार करते रहते है |

प्रस्तुत कहानी में निकम्मे लोगों को समाज से अपमान के सिवा कुछ भी प्राप्त नहीं होता, यह बताया है | धर्म के नाम पर किया जानेवाला कर्म प्रस्तुत कहानी द्वारा दर्शाया है |

2.38 **ओं नमो शिवाय** :-

दिसंबर, 2005 की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित ' ओं नमो शिवाय ' कहानी ' हर्षदेव ' द्वारा लिखित है | प्रस्तुत कहानी धार्मिक विषय पर आधारित है |

प्रस्तुत कहानी के नायक ' पुरचुरे ' जी ने कॉलोनी में नीचले माले पर एक फ्लैट खरीदा | वे परिवार के साथ वहाँ रहने आये | अपने फ्लैट के स्टोअर रुम की ओर कोने में उन्होनें पिंड़ी की स्थापना की | वे वहाँ पूजा-पाठ, जलाभिषेक, आरती करते हैं | कॉलोनी की कपूरनी अपनी फ्लैट से पिंड़ी के दर्शन खिड़की से देखकर करती है, उसने खिड़की की जगह दरवाजा लगाने की विनती की | पुरचुरे जी ने खिड़की की जगह दरवाजा लगा लिया | सिपाही ' कुलिंदर ' वहाँ लान बनवाकर दो इंजीनियरों को बिजली एवं रास्ते के प्रबंध के लिए लाता है | कॉलोनी के लोग अधिकार जमाते हुए उस मंदिर के द्वार सब के दर्शन के लिए खोलते हैं | दर्शनार्थियों की भीड़ से अशांति फैलती है | पुरचुरे वह फ्लैट ड़ीलर आहुजा को बेचने के लिए कहता है| वह रात को पिंड़ी हटाता है | तो सुबह

कॉलोनी के लोग चंदा इकठ्ठा कर नई पिंड़ी की प्रतिष्ठापना करते हैं | वहाँ के लोग मंत्री द्वारा मंदिर का उद्घाटन कर हर सोमवार को प्रसाद देने का आयोजन करते हैं |

' पुरचुरे 'उद्विग्न मन से रात के समय अपने फ्लैट के कमरे में सोते हैं | वे सपना देखते हैं, शिवजी पार्वती से कह रहे हैं, शिव-आराधना में पुरचुरे एक लाख बार माला जपेगा तो जरुर इसके कष्टों का निवारण होगा | सपने से जागकर वे रात के डेढ़ बजे ' ओं नमो शिवाय ' का जाप करने लगते हैं |

प्रस्तुत कहानी में धर्म के नाम पर लोग स्वार्थी वृत्ति से फँसाते हैं, इस बात को दर्शाया है | भक्ति दिखावे की चीज न होकर स्वांतसुखाय होती है, इस पक्ष को प्रस्तुत कहानी द्वारा दर्शाया है |

निष्कर्ष :-

प्रस्तुत अध्याय में ' वर्ष 2005 ' की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित कहानियों का सामान्य परिचय दिया है | इसका अध्ययन करने के पश्चात् निम्नलिखित निष्कर्षों को पाया गया हैं |

विवेच्य कहानियों में विषय-वैविध्य नज़र आता है | राजनीतिक परिस्थितियों से प्रभावित कहानियों का चित्रण ' वर्ष 2005 ' की ' हंस ' पत्रिकाओं में दिखाई देता है | ' पब्लिक ' कहानी में 'मुखौटेबाज राजनेताओं का एवं ' संस्कार ' कहानी में अवसरवादी राजनेता का चित्रण दृष्टव्य है |

विवेच्य कहानियाँ प्रमुखतः समाज में घटित होनेवाली घटनाओं पर आधारित है | रेल में यात्रा करते समय आनेवाली परेशानियों पर 'अंधेरे में आकार लेता नाटक,''बलात्कार ' ये कहानियाँ मार्मिकता से चोट करती है | 'खैरियत है ', 'शिनाख्त 'ये कहानियाँ मजहब और सांप्रदायिकता के कारण समाज के मानस पटल पर अंकित भयावहता, निरपराध लोगों की हत्या, जनजीवन की रोजमर्रा की जिंदगी पर उसके कारण होनेवाला परिणाम, परिस्थिति की भयावहता को दृष्टिगोचर हैं | उच्च वर्ग द्‌वारा निम्न वर्ग का शोषण 'कंठ फटी बासुरी ' कहानी में दर्शाया है |अनमेल विवाह, परित्यक्ता नारी का जीवन, लिंगभेद, अकेलापन इन विषयों का प्रभाव 'वर्ष 2005 ' की ' हंस ' पत्रिकाओं में प्रकाशित कहानियों पर दिखाई देता है |

विवेच्य कहानियाँ ' मनोविज्ञान ' पर आधारित लिखी गई हैं | 'एक लड़की की मौत ' कहानी की नायिका दिवास्वप्नों द्‌वारा अचेतना की शिकार होती दिखाई गई है | 'ड्रैकुला ' कहानी की अंतर्मुखी, ड़री हुई नायिका को अपने कमरे में 'ड्रैकुला ' दिखाई देता है | विवेच्य कहानियों की नायिकाएँ कहानी के अंत में अचेतना से चेतना में लौटती हुई नज़र आती है |

विवेच्य कहानियों में प्रकाशित 'खजांची ' कहानी आर्थिक विपन्नता को दर्शाती है | आर्थिक विपन्नता के ही कारण ' चीख ' कहानी का नायक ' पुरुष वेश्या ' बनता है |

वर्ष 2005 की ' हंस ' पत्रिकाओं में प्रकाशित कहानियाँ धार्मिक विषयों पर भी आधारित है | 'ओं नमो शिवाय ', 'भेड़ियाधसान ' इन कहानियों में पशु हत्या, पाखंड, अंधविश्वास इन बातों पर मार्मिक चोट की हैं | धर्म के नाम पर मठों में होनेवाला अनाचार ' कुण्ड़लिनी ' कहानी में चित्रित है |

'यही मुंबई है ' कहानी में महानगरीय परिवेश का चित्रण किया है | 'बुध्दू ' कहानी में ग्रामीण जन-जीवन, रीतियाँ , पद्धतियों का चित्रण किया गया है | विवेच्य कहानियों में सांस्कृतिक पक्ष को लेकर सिर्फ ' घर चलतें हैं डार्लिग ' कहानी में प्रकाश ड़ाला गया है |

विवेच्य कहानियों में नारी के विविध रुप परिलक्षित होते हैं | 'प्रेतकामना ' कहानी की अणिमा आत्मनिर्भर, प्रेरणादायी नारी के रुप में चित्रित है | ' घर चलते हैं डार्लिंग ' कहानी की 'नीरजा रतन ' आदर्श प्राध्यापिका है | ' इंतजार ' कहानी की ' चाची ' स्वाभिमानी, परित्यक्ता नारी है ; जिसके सामने बुढ़ापे में अकेलेपन की समस्या उभर आती है | 'लौटा तो भय ' कहानी की 'तारा ' साहसी, अंतर्जातीय विवाह करनेवाली नारी है | ' वर्ष 2005' की ' हंस ' पत्रिका में प्रकाशित कहानियों में नारी के विविध रूप जैसे पत्नी, माँ, बहन, प्रेमिका आदि पर प्रकाश ड़ाला गया है |

इस प्रकार कहा जा सकता है कि, ' वर्ष 2005' की ' हंस ' पत्रिका में राजनीतिक सामाजिक, धार्मिक परिस्थितियों के विवरण प्रस्तुत कर कहानियाँ लिखी गई हैं | ये कहानियाँ उद्देश्य के स्तर पर सिर्फ मनोरंजन ही नहीं करना चाहती अपितु सत्य की प्रतिष्ठापना भी करती हैं | कथानक के क्लायमैक्स रोचक एवं प्रभावी बन पड़े हैं | वर्ष 2005 की ' हंस पत्रिका में प्रकाशित कहानियाँ जीवन के विभिन्न पक्षों का चित्रण करने में समर्थ रही हैं |

संदर्भ :-

1. कहानी : अनुभव और अभिव्यक्ति - राजेंद्र यादव - पृ.189-190
2. 'हंस' जनवरी,2005 ; - शिनाख्त - नरेंद्र नागदेव - पृ.21
3. हंस, फरवरी,2005 ; - पब्लिक - रामधारी सिंह दिवाकर - पृ.25
4. हंस, जून,2005 ; - बलात्कार - मुकेश कौशिक - पृ.56
5. हंस, अक्तूबर,2005 ; - शॉर्ट कट - गुलजार - पृ.17
6. 'वही' - 'वही' - 'वही' - पृ.17
7. हंस, अक्तूबर,2005 ; - यही मुंबई है - हरिश्चंद्र बर्णवाल - पृ.61
8. हंस, अक्तूबर,2005 ; - बुध्दू - रोशन प्रेमयोगी - पृ.76
9. हंस, नवंबर,2005 ; - चीख - अजय नावरिया - पृ.57
10. अशोक मानक हिंदी शब्दकोश - संपा.डॉ.शिवप्रसाद शास्त्री - पृ.142
11. हंस, दिसंबर,2005 ; - उलटबांसी - कविता - पृ.41

****